

उत्तर प्रदेश कृषि अनुसन्धान परिषद्  
द्वारा  
आचार्य नरेंद्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, अयोध्या,  
का भ्रमण करने और समीक्षा के उपरांत की  
कार्यवृत्त  
कृषि शिक्षा कि प्रगति रिपोर्ट



उ० प्र० कृषि अनुसन्धान परिषद्  
निकट राजकीय उद्यान, करियप्पा मार्ग, आलमबाग, लखनऊ (उ० प्र०)- २२६००५

## आचार्य नरेंद्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, अयोध्या के दौरे की कार्यवृत्त

22-23 अगस्त 2025 को, उत्तर प्रदेश कृषि अनुसंधान परिषद (उपकार), लखनऊ के निम्नलिखित सदस्यों ने पिछले तीन वर्षों [2022-2025] के अनुसंधान, शिक्षा और प्रसार तथा संबद्ध कृषि महाविद्यालय में शिक्षा की समीक्षा के लिए आचार्य नरेंद्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, अयोध्या का दौरा किया।

1. डॉ. संजय सिंह, महानिदेशक
2. डॉ. परमेन्द्र सिंह, उप-महानिदेशक (कृ० शि० एवं प्रौ० ह०)
3. डॉ. राजर्षि कुमार गौड़, उप-महानिदेशक (अनु० परि० प्र० एवं सम०)

### कृषि महाविद्यालय, कुमारगंज की प्रगति रिपोर्ट

| 1. शिक्षण एवं तकनीकी पद विवरण  |   |         |         |         |
|--|---|---------|---------|---------|
|  | स्टाफ   | स्वीकृत | भरे हुए | रिक्त   |
|  | शिक्षण स्टाफ  | 66      | 39      | 27      |
|  | तकनीकी और सहायक स्टाफ   | 133     | 46      | 87      |
|  | कुल पद  | 199     | 85      | 114     |
| 2. राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 लागू करने हेतु की गई कार्रवाई (पिछले 3 वर्ष) |   |         |         |         |
|  | <ul style="list-style-type: none"> <li>भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (ICAR) की 6वीं डीन समिति की सिफारिशों के अनुसार लागू किया गया है।</li> </ul>  |         |         |         |
| 3. 6वीं डीन समिति का कार्यान्वयन एवं चुनौतियाँ                                   |   |         |         |         |
|  | <ul style="list-style-type: none"> <li>मल्टीपल एंटी-एग्जिट सिस्टम से संबंधित मुद्दे</li> <li>MOOCs के लिए उचित दिशा निर्देशों का अभाव</li> </ul>  |         |         |         |
| 4. "विकसित भारत @2047" के लिए दृष्टिकोण  |   |         |         |         |
|  | <ul style="list-style-type: none"> <li>शिक्षा, अनुसंधान और विस्तार को सशक्त बनाना</li> <li>टिकाऊ और जलवायु-लचीली कृषि।</li> <li>प्रौद्योगिकी एकीकरण और डिजिटल बुनियादी ढाँचा।</li> <li>आर्थिक विकास और किसान सशक्तिकरण</li> </ul> |         |         |         |
| 5. छात्र पंजीकरण (स्नातक/स्नातकोत्तर/पीएच.डी. - पिछले 3 वर्ष)                    |   |         |         |         |
|  | डिग्री कार्यक्रम  | 2022-23 | 2023-24 | 2024-25 |
|  | स्नातक (UG)   | 157     | 219     | 230     |
|  | स्नातकोत्तर (PG)  | 175     | 229     | 262     |
|  | पीएच.डी. (Ph.D)   | 46      | 55      | 68      |
| 6. अन्य देशों से नामांकित छात्र (SAARC/ Non-SAARC)                               |   |         |         |         |
|  | <ul style="list-style-type: none"> <li>01 (स्नातकोत्तर/PG) छात्र नामांकित हुआ।</li> </ul>   |         |         |         |
| 7. NAAS $\geq 6$ से ऊपर के प्रकाशन (पिछले 3 वर्ष)                                |   |         |         |         |
|  | 2022-23   | 2023-24 | 2024-25 |         |

|            |   |                         |                |
|------------|---|-------------------------|----------------|
|            | 14  | 24                      | 25             |
| <b>8.</b>  | <b>छात्र-शिक्षक अनुपात (एम.एससी. / पीएच.डी. )</b>   |                         |                |
|            | <b>एम.एस.सी. (M.Sc.)</b>  | <b>पीएच.डी. (Ph.D.)</b> |                |
|            | 3:27  | 0:85                    |                |
| <b>9.</b>  | <b>प्राकृतिक खेती पाठ्यक्रम/अनुसंधान की स्थिति (छात्र)</b>  |                         |                |
|            | <ul style="list-style-type: none"> <li>▪ प्राकृतिक खेती का पाठ्यक्रम बी.एससी. (ऑनर्स) कृषि कार्यक्रम में शुरू किया गया है</li> <li>▪ प्राकृतिक खेती पर अनुसंधान चल रहा है, और पीएच.डी.के 2 छात्र प्राकृतिक खेती पर कार्य कर रहे हैं।</li> </ul>   |                         |                |
| <b>10.</b> | <b>पेटेंट की संख्या (पिछले 3 वर्ष )</b>   |                         |                |
|            | <b>2022-23</b>  | <b>2023-24</b>          | <b>2024-25</b> |
|            | -   | 04                      | 14             |
| <b>11.</b> | <b>किसान स्तर पर अंगीकरण और प्रभाव</b>  |                         |                |
|            | <ul style="list-style-type: none"> <li>▪ महाविद्यालय द्वारा विकसित तकनीकों को किसानों ने व्यापक रूप से अपनाया है।</li> </ul>  |                         |                |
| <b>12.</b> | <b>छात्र प्लेसमेंट (पिछले 3 वर्षों का वर्ष-वार)</b>   |                         |                |
|            | <b>2022-23</b>  | <b>2023-24</b>          | <b>2024-25</b> |
|            | 60  | 120                     | 109            |
| <b>13.</b> | <b>सशुल्क इंटरशिप की संख्या (पिछले 3 वर्ष )</b>   |                         |                |
|            | <ul style="list-style-type: none"> <li>▪ वर्ष 2024-25 के दौरान MBA (ABM) के कुल 69 छात्रोंको विभिन्न कंपनियों द्वारा सशुल्क इंटरशिप प्रदान की गई है।</li> </ul>   |                         |                |
| <b>14.</b> | <b>छात्र एसआरएफ/जेआरएफ की संख्या (पिछले 3 वर्ष)</b>   |                         |                |
|            | <b>2022-23</b>  | <b>2023-24</b>          | <b>2024-25</b> |
|            | 10  | 12                      | 14             |
| <b>15.</b> | <b>इनोवेशन सेंटर/इनक्यूबेशन सेंटर/स्टार्ट-अप/उद्यमिता</b>   |                         |                |
|            | <ul style="list-style-type: none"> <li>▪ इनक्यूबेशन सेंटर की स्थापना हो चुकी है।</li> </ul>   |                         |                |
| <b>16.</b> | <b>अकादमिक सशक्तिकरण के लिए भविष्य की योजना</b>   |                         |                |
|            | <ul style="list-style-type: none"> <li>▪ आधुनिक पाठ्यक्रम और निरंतर समीक्षा।</li> <li>▪ नए शैक्षणिक कार्यक्रम:बी.एससी. (ऑनर्स.)और एम.एससी. (एजी.)प्राकृतिक खेती।</li> <li>▪ उच्च उपज और जलवायु-लचीली किस्में</li> <li>▪ अंतर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय भागीदारी</li> <li>▪ प्रौद्योगिकी विकास और प्रसार</li> <li>▪ बुनियादी ढांचा और संकाय विकास</li> <li>▪ प्लेसमेंट के लिए मजबूत उद्योग संपर्क: छात्रों के लिए करियर के अवसर प्रदान करने हेतु अग्रणी कृषि व्यवसायों, अनुसंधान संगठनों और गैर सरकारी संगठनों के साथ जुड़ाव</li> </ul> |                         |                |

## उद्यान एवं वानिकी महाविद्यालय की प्रगति रिपोर्ट

|           |   |         |       |                               |         |       |
|-----------|---|---------|-------|-------------------------------|---------|-------|
| <b>1.</b> | <b>शिक्षण एवं तकनीकी पद विवरण</b>   |         |       |                               |         |       |
|           | <b>शिक्षण स्टाफ</b>   |         |       | <b>तकनीकी एवं सहायक स्टाफ</b> |         |       |
|           | स्वीकृत   | कार्यरत | रिक्त | स्वीकृत                       | कार्यरत | रिक्त |
|           | 32  | 20      | 12    | 42                            | 15      | 27    |
| <b>2.</b> | <b>राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 का क्रियान्वयन (पिछले 3 वर्ष)</b>   |         |       |                               |         |       |
|           | <ul style="list-style-type: none"> <li>● गुणवत्तापूर्ण विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय</li> <li>● संस्थागत पुनर्गठन एवं एकीकरण</li> <li>● समग्र एवं बहुविषयक शिक्षा</li> <li>● छात्रों के लिए उपयुक्त शिक्षण वातावरण एवं सहयोग</li> <li>● अंतरराष्ट्रीयकरण</li> <li>● छात्र गतिविधियाँ एवं सहभागिता</li> <li>● छात्रों को वित्तीय सहयोग</li> <li>● प्रेरित एवं सक्षम शिक्षक</li> <li>● शिक्षक शिक्षा</li> <li>● व्यावसायिक प्रशिक्षण एवं प्रोफेशनल शिक्षा</li> <li>● राष्ट्रीय अनुसंधान फाउंडेशन द्वारा गुणवत्तापूर्ण अनुसंधान</li> <li>● भारतीय भाषा, कला एवं संस्कृति का संवर्धन</li> <li>● प्रौद्योगिकी का उपयोग एवं डिजिटल शिक्षा</li> <li>● अन्य – MEME, ABC, वित्त</li> </ul> |         |       |                               |         |       |
| <b>3.</b> | <b>छठी डीन समिति का क्रियान्वयन एवं चुनौतियाँ</b>   |         |       |                               |         |       |
|           | <p><b>क्रियान्वयन (अब तक की प्रगति):</b></p> <ul style="list-style-type: none"> <li>● अनुशासित स्नातक पाठ्यक्रम को लागू किया गया (विशेष रूप से बी.एससी. (ऑनर्स) उद्यान विज्ञान एवं बी.एससी. वानिकी)।</li> </ul> <p><b>चुनौतियाँ:</b></p> <ul style="list-style-type: none"> <li>● टाइपिंग त्रुटियाँ</li> <li>● परीक्षा, मूल्यांकन प्रणाली एवं शैक्षणिक कैलेंडर में भिन्नता (SAUs के बीच)</li> <li>● ICAR कोटा भरने में अत्यधिक विलंब</li> <li>● संबद्ध महाविद्यालय एवं निजी विश्वविद्यालय</li> <li>● ICAR दिशा-निर्देशों के अनुसार स्नातकोत्तर कार्यक्रम की समान निगरानी का अभाव</li> </ul>   |         |       |                               |         |       |
| <b>4.</b> | <b>"विकसित भारत@2047" हेतु दृष्टिकोण</b>  |         |       |                               |         |       |
|           | <ul style="list-style-type: none"> <li>● कृषि क्षेत्र के मानव संसाधनों की नीति</li> <li>● माँग आधारित प्रौद्योगिकी विकास</li> <li>● पर्याप्त अनुसंधान एवं डाटा के बाद ही तकनीक का हस्तांतरण</li> <li>● कृषि विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी पर नैतिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक प्रभाव को न्यूनतम करना</li> </ul>   |         |       |                               |         |       |

|     |   |                       |                  |                 |
|-----|---|-----------------------|------------------|-----------------|
| 5.  | <b>छात्र नामांकन प्रवृत्ति (यूजी/पीजी/पीएच.डी- पिछले 3 वर्ष)</b>  |                       |                  |                 |
|     | <b>वर्ष</b>   | <b>स्नातक</b>         | <b>परस्नातक</b>  | <b>पीएच.डी.</b> |
|     | 2022-23   | 78                    | 40               | 15              |
|     | 2023-24   | 96                    | 52               | 16              |
|     | 2024-25   | 119                   | 59               | 21              |
| 6.  | <b>विदेशी छात्रों का नामांकन (SAARC/ Non-SAARC)</b>   |                       |                  |                 |
|     | <b>वर्ष</b>   | <b>SAARC</b>          | <b>Non-SAARC</b> |                 |
|     | 2022-23   | -                     | -                |                 |
|     | 2023-24   | -                     | -                |                 |
|     | 2024-25   | 01                    | 01               |                 |
| 7.  | <b>प्रकाशन (NAAS <math>\geq</math> 6) – पिछले 3 वर्ष</b>  |                       |                  |                 |
|     | <b>वर्ष</b>   | <b>प्रकाशन संख्या</b> |                  |                 |
|     | 2022-23   | 04                    |                  |                 |
|     | 2023-24   | 08                    |                  |                 |
|     | 2024-25   | 07                    |                  |                 |
|     | 2025-26   | 10                    |                  |                 |
| 8.  | <b>छात्र-शिक्षक अनुपात (एम.एस.सी./पीएच.डी.)</b>   |                       |                  |                 |
|     | <b>डिग्री कार्यक्रम</b>   | <b>2022-23</b>        | <b>2023-24</b>   | <b>2024-25</b>  |
|     | एम.एस.सी.   | 3:1                   | 4:1              | 5:1             |
|     | पीएच.डी   | 2:1                   | 2:1              | 2:1             |
| 9.  | <b>प्राकृतिक खेती पाठ्यक्रम / अनुसंधान की स्थिति</b>  |                       |                  |                 |
|     | <ul style="list-style-type: none"> <li>स्नातक स्तर पर "प्राकृतिक खेती के सिद्धांत एवं व्यवहार" (2 क्रेडिट: 1+1) नामक पाठ्यक्रम संचालित किया जा रहा है एवं इस क्षेत्र में छात्र अनुसंधान सक्रिय रूप से जारी है।</li> </ul> |                       |                  |                 |
| 10. | <b>पेटेंट की संख्या (पिछले 3 वर्ष)</b>  |                       |                  |                 |
|     | <b>वर्ष</b>   | <b>संख्या</b>         |                  |                 |
|     | 2022-23   | -                     |                  |                 |
|     | 2023-24   | -                     |                  |                 |
|     | 2024-25   | 09                    |                  |                 |
| 11. | <b>किसान स्तर पर अपनाया जाना एवं प्रभाव</b>   |                       |                  |                 |
|     | <ul style="list-style-type: none"> <li>बीज की माँग</li> <li>पौध एवं रोपण सामग्री की आपूर्ति</li> <li>प्रशिक्षण हेतु प्राथमिकता</li> <li>किसानों के साथ दौरे एवं सहभागिता</li> </ul>                                       |                       |                  |                 |
| 12. | <b>छात्र प्लेसमेंट (पिछले 3 वर्ष)</b>   |                       |                  |                 |
|     | <b>वर्ष</b>   | <b>संख्या</b>         |                  |                 |
|     | 2022-23   | 16                    |                  |                 |
|     | 2023-24   | 17                    |                  |                 |
|     | 2024-25   | 03                    |                  |                 |
| 13. | <b>पेड इंटरनेशिप की संख्या</b>  |                       |                  |                 |
|     | -   |                       |                  |                 |

| 14. | छात्र JRF / SRF की संख्या (पिछले 3 वर्ष)   |     |     |
|-----|--|-----|-----|
|     | वर्ष   | JRF | SRF |
|     | 2022-23  | -   | -   |
|     | 2023-24  | -   | 03  |
|     | 2024-25  | 02  | 02  |
| 15. | नवाचार केन्द्र/इन्क्यूबेशन/स्टार्ट-अप/उद्यमिता   |     |     |
|     | -  |     |     |
| 16. | शैक्षणिक सुदृढीकरण की भविष्य योजना   |     |     |
|     | <ul style="list-style-type: none"> <li>● शिक्षण में उन्नति ताकि स्नातक एवं स्नातकोत्तर छात्रों की सीखने की क्षमता में सुधार हो।</li> <li>● प्रयोगशालाओं का आधुनिकीकरण एवं उद्यान एवं वानिकी में उत्कृष्टता केन्द्र की स्थापना।</li> <li>● अनुसंधान के प्रमुख क्षेत्रों की प्राथमिकता – जलवायु सहनशील तकनीकें, सटीक उद्यान विज्ञान, प्राकृतिक खेती एवं जैविक खेती।</li> <li>● उद्योग एवं संस्थान के बीच मजबूत संबंध विकसित करना ताकि छात्रों को बेहतर अनुसंधान, रोजगार एवं उद्यमिता के अवसर मिल सकें।</li> <li>● राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर संकाय एवं छात्रों के बीच विचारों के आदान-प्रदान हेतु सहयोग विकसित करना।</li> </ul> |     |     |

**महामाया कृषि अभियान्त्रिकी एवं प्रौद्योगिकी महाविद्यालय अम्बेडकर नगर की  
प्रगति रिपोर्ट**

|           |   |                       |                |                 |
|-----------|---|-----------------------|----------------|-----------------|
| <b>1.</b> | <b>शिक्षण एवं तकनीकी पद विवरण</b>   |                       |                |                 |
|           |   | <b>स्वीकृत</b>        | <b>कार्यरत</b> | <b>रिक्त</b>    |
|           | <b>शिक्षण स्टाफ</b>   | 25                    | 12             | 13              |
|           | <b>तकनीकी एवं सहायक स्टाफ</b>   | 13                    | 04             | 09              |
| <b>2.</b> | <b>राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 के कार्यान्वयन पर की गई कार्रवाई (पिछले 3 वर्ष)</b>   |                       |                |                 |
|           | <ul style="list-style-type: none"> <li>▪ NEP 2020 को सत्र 2022-23 से बी.टेक (कृषि अभियंत्रण) कार्यक्रम में लागू किया गया। जिसके पाठ्यक्रम में निम्नलिखित परिवर्तन किए गए हैं –</li> <li>▪ आईसीएआर की पाँचवीं डीन समिति द्वारा अनुशंसित पाठ्यक्रम में 10-20% व्यावहारिक विषयों में स्थानीय आवश्यकताओं के अनुसार संशोधन।</li> <li>▪ आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, डेयरी एवं फूड प्रोसेसिंग, इंस्ट्रुमेंटेशन एवं प्रोसेस कंट्रोल, माइक्रो इरिगेशन इंजीनियरिंग आदि जैसे वैल्यू ऐडेड कोर्स शामिल किए गए।</li> <li>▪ विद्यार्थियों में नवाचार, उद्योग तैयारी और उद्यमिता को प्रोत्साहित करने हेतु प्रशिक्षण एवं इंटर्नशिप को पाठ्यक्रम का भाग बनाया गया।</li> </ul> |                       |                |                 |
| <b>3.</b> | <b>छठी डीन समिति के कार्यान्वयन एवं चुनौतियाँ (2024-25)</b>   |                       |                |                 |
|           | <ul style="list-style-type: none"> <li>▪ बी.टेक कृषि अभियंत्रण में मल्टीपल एंटी एवं एग्जिट विकल्पों के लिए दिशा-निर्देशों का अभाव।</li> <li>▪ READY कोर्स एवं ELP के प्रभावी संचालन हेतु संस्थान स्तर पर अधो संरचना सुदृढ़ करने की आवश्यकता।</li> </ul>   |                       |                |                 |
| <b>4.</b> | <b>“विकसित भारत @2047” के लिए दृष्टिकोण</b>   |                       |                |                 |
|           | <ul style="list-style-type: none"> <li>▪ छात्रों को स्टार्ट-अप और मेक इन इंडिया परियोजनाओं में भागीदारी के लिए प्रोत्साहित करना।</li> <li>▪ यू.जी./पी.जी. स्तर पर उद्योगोन्मुख अनुसंधान तकनीकों को अपनाना।</li> <li>▪ कृषि में एआई एवं रोबोटिक्स के प्रयोग को बढ़ावा देना।</li> <li>▪ एग्रीकल्चर 5.0 की अवधारणा को लागू करना — जैसे सटीक खेती, डिजिटल कृषि, ड्रोन एवं IoT प्रणाली।</li> <li>▪ सतत कृषि मॉडल को सुदृढ़ करने हेतु कृषि अभियंत्रण के विभिन्न क्षेत्रों में नई तकनीकों का उपयोग।</li> </ul>   |                       |                |                 |
| <b>5.</b> | <b>विद्यार्थी नामांकन प्रवृत्ति (पिछले 3 वर्ष)</b>  |                       |                |                 |
|           | <b>वर्ष</b>   | <b>बी.टेक</b>         | <b>एम.टेक</b>  | <b>पी.एच.डी</b> |
|           | 2022-23   | 08                    | 06             | -               |
|           | 2023-24   | 18                    | 08             | 07              |
|           | 2024-25   | 39                    | 06             | 02              |
| <b>6.</b> | <b>अन्य देशों (SAARC/Non-SAARC) से छात्र नामांकन (पिछले 3 वर्ष)</b>   |                       |                |                 |
|           | -   |                       |                |                 |
| <b>7.</b> | <b>NAAS <math>\geq 6</math> वाली प्रकाशन संख्या (पिछले 3 वर्ष)</b>  |                       |                |                 |
|           | <b>वर्ष</b>   | <b>प्रकाशन संख्या</b> |                |                 |

|            |  |                  |
|------------|--|------------------|
|            | 2022-23  | 07               |
|            | 2023-24  | 02               |
|            | 2024-25  | 08               |
| <b>8.</b>  | <b>छात्र-शिक्षक अनुपात (एम.एससी./पी.एच.डी.)</b>  |                  |
|            | <ul style="list-style-type: none"> <li>1.6: 1</li> </ul>   |                  |
| <b>9.</b>  | <b>प्राकृतिक कृषि पाठ्यक्रम/अनुसंधान की स्थिति (छात्र)</b>   |                  |
|            | -  |                  |
| <b>10.</b> | <b>पेटेंट संख्या (पिछले 3 वर्ष)</b>  |                  |
|            | <b>वर्ष</b>  | <b>पेटेंट</b>    |
|            | 2022-23  | -                |
|            | 2023-24  | 04               |
|            | 2024-25  | 10               |
| <b>11.</b> | <b>किसानों के स्तर पर प्रौद्योगिकी अपनाने का प्रभाव</b>  |                  |
|            | <ul style="list-style-type: none"> <li>कुल तीन तकनीकें विकसित की गई हैं जो वर्तमान में किसानों के खेतों पर परीक्षणधीन हैं —</li> <li>मानव रहित ग्राउंड स्प्रेयर</li> <li>सोलर संचालित गन्ना हार्वेस्टर</li> <li>घरेलू सौर ड्रायर</li> </ul>  |                  |
| <b>12.</b> | <b>छात्र प्लेसमेंट (पिछले 3 वर्ष)</b>  |                  |
|            | <b>वर्ष</b>  | <b>प्लेसमेंट</b> |
|            | 2022-23  | 12               |
|            | 2023-24  | 07               |
|            | 2024-25  | 12               |
| <b>13.</b> | <b>सशुल्क इंटरशिप (पिछले 3 वर्ष)</b>   |                  |
|            | <b>वर्ष</b>  | <b>संख्या</b>    |
|            | 2022-23  | 23               |
|            | 2023-24  | 22               |
|            | 2024-25  | 26               |
| <b>14.</b> | <b>छात्र JRF/SRF (पिछले 3 वर्ष)</b>  |                  |
|            | <b>वर्ष</b>  | <b>JRF/SRF</b>   |
|            | 2022-23  | 01               |
|            | 2023-24  | 03               |
|            | 2024-25  | -                |
| <b>15.</b> | <b>इनोवेशन/इन्क्यूबेशन/स्टार्ट-अप/उद्यमिता केंद्र</b>  |                  |
|            | -  |                  |
| <b>16.</b> | <b>अकादमिक सुदृढ़ीकरण की भविष्य योजना</b>  |                  |
|            | <ul style="list-style-type: none"> <li>विभिन्न पाठ्यक्रमों के लिए ई-कंटेंट एवं MOOCs तैयार करना।</li> <li>AI, रोबोटिक्स, रिमोट सेंसिंग, नैनो टेक्नोलॉजी आधारित नए कोर्स शुरू करना।</li> <li>विभागीय प्रयोगशालाओं में अनुसंधान अधोसंरचना को सुदृढ़ करना।</li> <li>उच्च प्रभाव कारक वाली पत्रिकाओं में शोध प्रकाशित करने हेतु प्रोत्साहन।</li> </ul> |                  |

- |  |  |
|--|--|
|  | <ul style="list-style-type: none"><li>▪ GATE, JRF, CAT आदि परीक्षाओं हेतु अध्ययन सामग्री और विशेषज्ञों के लिए फंड की व्यवस्था।</li><li>▪ शिक्षकों को बी.टेक/एम.टेक शोध कार्यों के लिए सीडमनी प्रदान करना।</li><li>▪ ई-लाइब्रेरी एवं कंप्यूटरीकृत पुस्तकालय की स्थापना।</li><li>▪ छात्रों के लिए नए छात्रावास, खेल, योग और प्लेसमेंट सुविधाओं का विस्तार।</li><li>▪ ERP प्रणाली को शैक्षणिक गतिविधियों में लागू करना।</li></ul> |
|--|--|

## पशु चिकित्सा विज्ञान एवं पशुपालन महाविद्यालय की प्रगति रिपोर्ट

|           |  |               |                  |                               |         |       |
|-----------|--|---------------|------------------|-------------------------------|---------|-------|
| <b>1.</b> | <b>शिक्षण एवं तकनीकी पद विवरण</b>  |               |                  |                               |         |       |
|           | <b>शिक्षण स्टाफ</b>  |               |                  | <b>तकनीकी एवं सहायक स्टाफ</b> |         |       |
|           | स्वीकृत  | कार्यरत       | रिक्त            | स्वीकृत                       | कार्यरत | रिक्त |
|           | 87   | 54            | 33               | 218                           | 146     | 72    |
| <b>2.</b> | <b>राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 का क्रियान्वयन (पिछले 3 वर्ष)</b>  |               |                  |                               |         |       |
|           | <ul style="list-style-type: none"> <li>● 06 विभागों में अंतःविषयक पाठ्यक्रम प्रारंभ किए गए।</li> <li>● विभिन्न विषयों में 12 मूल्य संवर्धित पाठ्यक्रम प्रारंभ किए गए।</li> <li>● डिप्लोमा पाठ्यक्रम प्रारंभ किए जा रहे हैं</li> <li>● पशु चिकित्सा फार्मसी में डिप्लोमा</li> <li>● पशुधन विस्तार में डिप्लोमा</li> </ul>   |               |                  |                               |         |       |
| <b>3.</b> | <b>छठी डीन समिति का क्रियान्वयन एवं चुनौतियाँ</b>  |               |                  |                               |         |       |
|           | <ul style="list-style-type: none"> <li>● स्नातक (बी.वी.एससी. एवं ए.एच.) पाठ्यक्रमों के लिए भारतीय पशु चिकित्सा परिषद (VCI) विनियम, 2016 का पालन किया जा रहा है।</li> <li>● स्नातकोत्तर कार्यक्रम आईसीएआर दिशा-निर्देशों के अनुसार संचालित हैं।</li> </ul>  |               |                  |                               |         |       |
| <b>4.</b> | <b>"विकसित भारत@2047" हेतु दृष्टिकोण</b>   |               |                  |                               |         |       |
|           | <ul style="list-style-type: none"> <li>● पूर्वी उत्तर प्रदेश में श्रेष्ठ नस्लीय जर्मप्लाज्म द्वारा पशु उत्पादन में वृद्धि।</li> <li>● पशुधन के स्वास्थ्य एवं उत्पादकता सुधार हेतु पोषण रणनीतियाँ विकसित करना।</li> <li>● पूर्वी उत्तर प्रदेश में संक्रामक एवं जन्तुजनित रोगों का रणनीतिक नियंत्रण।</li> <li>● दूध एवं मांस प्रसंस्करण तथा मूल्य संवर्धन तकनीकों को अपनाने में वृद्धि।</li> </ul> |               |                  |                               |         |       |
| <b>5.</b> | <b>छात्र पंजीकरण (यूजी/पीजी/पीएच.डी- पिछले 3 वर्ष)</b>   |               |                  |                               |         |       |
|           | <b>वर्ष</b>  | <b>स्नातक</b> | <b>परस्नातक</b>  | <b>पीएच.डी.</b>               |         |       |
|           | 2022-23  | 80            | 22               | 04                            |         |       |
|           | 2023-24  | 68            | 31               | 13                            |         |       |
|           | 2024-25  | 68            | 38               | 05                            |         |       |
| <b>6.</b> | <b>विदेशी छात्रों का पंजीकरण (SAARC/ Non-SAARC)</b>  |               |                  |                               |         |       |
|           | <b>वर्ष</b>  | <b>SAARC</b>  | <b>Non-SAARC</b> |                               |         |       |
|           | 2022-23  | 00            | 00               |                               |         |       |
|           | 2023-24  | 01            | 00               |                               |         |       |
|           | 2024-25  | 00            | 00               |                               |         |       |
| <b>7.</b> | <b>प्रकाशन (NAAS <math>\geq</math> 6) – पिछले 3 वर्ष</b>   |               |                  |                               |         |       |
|           | <b>वर्ष</b>  |               |                  | <b>प्रकाशन संख्या</b>         |         |       |
|           | 2022-23  |               |                  | 11                            |         |       |
|           | 2023-24  |               |                  | 26                            |         |       |
|           | 2024-25  |               |                  | 34                            |         |       |
| <b>8.</b> | <b>छात्र-शिक्षक अनुपात (एम.एस.सी./पीएच.डी.)</b>  |               |                  |                               |         |       |
|           | डिग्री कार्यक्रम   | 2022-25       |                  |                               |         |       |

|     |   |        |     |
|-----|---|--------|-----|
|     | एम.एस.सी.   | 1:28   |     |
|     | पीएच.डी   | 0:3    |     |
| 9.  | प्राकृतिक खेती पाठ्यक्रम / अनुसंधान की स्थिति   |        |     |
|     | <ul style="list-style-type: none"> <li>प्राकृतिक खेती का पाठ्यक्रम संचालन</li> </ul>  |        |     |
| 10. | पेटेंट की संख्या (पिछले 3 वर्ष)   |        |     |
|     | वर्ष  | संख्या |     |
|     | 2022-23   | 00     |     |
|     | 2023-24   | 00     |     |
|     | 2024-25   | 01     |     |
| 11. | किसान स्तर पर अपनाया जाना एवं प्रभाव  |        |     |
|     | (क) किसान स्तर पर स्वीकृति: <ul style="list-style-type: none"> <li>किसानों ने वैज्ञानिक पशुपालन विधियों (खुराक, प्रजनन एवं प्रबंधन) को अपनाया।</li> <li>टीकाकरण एवं कृमिनाशन द्वारा रोगों की रोकथाम अपनाई।</li> <li>नियमित रूप से प्रशिक्षण एवं स्वास्थ्य/बांझपन शिविरों में भाग लिया।</li> <li>नैदानिक सेवाओं, डायग्नोस्टिक लैब्स एवं मोबाइल पशु चिकित्सा इकाइयों का उपयोग किया।</li> <li>सेक्स-सॉर्टेड वीर्य के माध्यम से कृत्रिम गर्भाधान अपनाया।</li> </ul> |        |     |
|     | (ख) किसान स्तर पर प्रभाव: <ul style="list-style-type: none"> <li>पशु स्वास्थ्य एवं उत्पादकता में सुधार।</li> <li>मृत्यु एवं रोग दर में कमी।</li> <li>किसानों की आर्थिक स्थिति में उन्नति।</li> <li>ग्रामीण युवाओं में कौशल विकास।</li> </ul>  |        |     |
| 12. | छात्र प्लेसमेंट (पिछले 3 वर्ष)  |        |     |
|     | वर्ष  | संख्या |     |
|     | 2022-23   | 26     |     |
|     | 2023-24   | 30     |     |
|     | 2024-25   | 01     |     |
| 13. | पेड इंटरशिप की संख्या   |        |     |
|     | -   |        |     |
| 14. | छात्र JRF / SRF की संख्या (पिछले 3 वर्ष)  |        |     |
|     | वर्ष  | JRF    | SRF |
|     | 2022-23   | -      | 01  |
|     | 2023-24   | 05     | 02  |
|     | 2024-25   | -      | 01  |
| 15. | नवाचार केन्द्र/इन्क्यूबेशन/स्टार्ट-अप/उद्यमिता  |        |     |
|     | 2022-23   | 05     |     |
|     | 2023-24   | 06     |     |
|     | 2024-25   | 04     |     |
| 16. | शैक्षणिक सुदृढीकरण की भविष्य योजना  |        |     |

- |  |
|--|
| <ul style="list-style-type: none"><li>● पशु स्वास्थ्य देखभाल में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) तकनीकों का समावेश।</li><li>● मूल अनुसंधान से लेकर व्यावसायीकरण तक अनुसंधान क्षेत्र का विस्तार।</li><li>● उन्नत तकनीकों का प्रसार प्रभावी एवं दक्ष आईसीटी उपकरणों के माध्यम से।</li><li>● सहयोग द्वारा व्यावसायिक समृद्धि।</li><li>● MOOCs जैसे प्लेटफॉर्म के माध्यम से ऑनलाइन पाठ्यक्रम विकसित करना।</li></ul> |
|--|

## मत्स्य पालन महाविद्यालय की प्रगति रिपोर्ट

|           |   |                |                |                 |
|-----------|---|----------------|----------------|-----------------|
| <b>1.</b> | <b>शिक्षण एवं तकनीकी पद विवरण</b>   |                |                |                 |
|           |   | <b>स्वीकृत</b> | <b>कार्यरत</b> | <b>रिक्त</b>    |
|           | शिक्षण स्टाफ  | 28             | 11             | 17              |
|           | तकनीकी एवं सहायक स्टाफ  | 05             | 04             | 01              |
| <b>2.</b> | <b>राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 के कार्यान्वयन पर की गई कार्रवाई (पिछले 3 वर्ष)</b>   |                |                |                 |
|           | <ul style="list-style-type: none"> <li>● दीक्षारम्भ प्रेरण कार्यक्रम</li> <li>● शैक्षणिक विनियमों और मत्स्य पालन संभावनाओं के लिए अभिविन्यास</li> <li>● बागवानी एवं सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालयों में भ्रमण</li> <li>● विशेषज्ञवार्ता: डीडीएफ ( अयोध्या) मण्डल ) ने भारत सरकार के प्रमुख मत्स्य पालन कार्यक्रमों पर चर्चा की</li> <li>● नवीन शिक्षण पद्धतियों का उपयोग करना - फ्लिपड, मिश्रित, ऑनलाइन शिक्षण और एक्सपोज़िटिव विधियाँ</li> <li>● MOOCs/ऑनलाइन पाठ्यक्रमों की सांकेतिक सूची प्रसारित की गई और छात्रों ने नामांकन कराया</li> </ul>   |                |                |                 |
| <b>3.</b> | <b>छठी डीन समिति के कार्यान्वयन एवं चुनौतियाँ (2024-25)</b>   |                |                |                 |
|           | <ul style="list-style-type: none"> <li>● विलयित पाठ्यक्रम - उदाहरण: शेलफिश और फिनफिश टैक्सोनोंमी संयुक्त → लंबा पाठ्यक्रम, कम स्पष्टता और ज्ञान सेवना</li> <li>● व्यावहारिक पाठ्यक्रमों का प्रारंभिक परिचय - उद्यमिता विकास जैसे पाठ्यक्रम बिना आधारभूत ज्ञान के तीसरे वर्ष से प्रथम वर्ष में स्थानांतरित कर दिए गए (उदाहरण के लिए, मत्स्य पालन विस्तार शिक्षा)।</li> <li>● तैराकी पाठ्यक्रम को हटाना - 5वीं डीन की रिपोर्ट में मौजूद था लेकिन 6वीं में हटा दिया गया; तैराकी मत्स्य पालन गतिविधियों और जीवन रक्षक सुरक्षा के लिए अभिन्न अंग है।</li> </ul>  |                |                |                 |
| <b>4.</b> | <b>“विकसित भारत @2047” के लिए दृष्टिकोण</b>   |                |                |                 |
|           | <ul style="list-style-type: none"> <li>● नवोदित छात्रों में उद्यमशीलता की भावना को बढ़ावा देने के लिए विश्वविद्यालय स्तर/कॉलेज स्तर पर संकाय बोर्ड के सदस्य के रूप में क्षेत्र में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले उद्यमियों को शामिल करना।</li> <li>● संस्थान स्तर पर नवाचार और रचनात्मकता प्रकोष्ठ की स्थापना : शिखर सम्मेलनों, गोष्ठियों और छात्रवृत्तियों के माध्यम से छात्र नवाचार को बढ़ावा देना।</li> <li>● शोधकर्ता-उद्यमी इनक्यूबेशन सेल का विकास करना, जहां विश्वविद्यालयों के शोध परिणामों को सीधे उद्यमियों को अपनाने और गतिविधि की निरंतर निगरानी के लिए सौंपा जाएगा।</li> <li>● छात्र विनिमय कार्यक्रम उच्च शिक्षा संस्थानों के बीच समन्वय को सुगम बनाने की आवश्यकता है और विशेष रूप से मास्टर स्तर और पीएचडी शोधार्थियों के लिए कुछ प्रमुख संस्थानों में एक महीने के अनुसंधान अनुलम्बक प्रशिक्षण (आरएटी) का प्रावधान होना चाहिए।</li> <li>● संकाय प्रेरण कार्यक्रम/पुनश्चर्या प्रशिक्षण कार्यक्रम की शुरुआत संस्थागत स्तर पर उनके कौशल को निखारने और प्रशासनिक मानदंडों के प्रति उन्मुखीकरण के लिए आयोजित किए जाने की आवश्यकता है।</li> <li>● छात्रों को उनके संबंधित विभागों के प्रति उन्मुख करने और अनुसंधान के नवीनतम महत्वपूर्ण क्षेत्रों के बारे में जागरूक करने के लिए मास्टर/पीएचडी स्तर पर छात्र प्रेरण कार्यक्रम का प्रावधान।</li> </ul> |                |                |                 |
| <b>5.</b> | <b>विद्यार्थी नामांकन प्रवृत्ति (पिछले 3 वर्ष)</b>  |                |                |                 |
|           | <b>वर्ष</b>   | <b>यू.जी</b>   | <b>पी.जी</b>   | <b>पी.एच.डी</b> |

|            |  |                       |    |    |
|------------|--|-----------------------|----|----|
|            | 2022-23  | 16                    | 07 | -  |
|            | 2023-24  | 31                    | 17 | 04 |
|            | 2024-25  | 29                    | 13 | 03 |
| <b>6.</b>  | <b>अन्य देशों (SAARC/Non-SAARC) से छात्र नामांकन (पिछले 3 वर्ष)</b>  |                       |    |    |
|            | -  |                       |    |    |
| <b>7.</b>  | <b>NAAS <math>\geq 6</math> वाली प्रकाशन संख्या (पिछले 3 वर्ष)</b>   |                       |    |    |
|            | <b>वर्ष</b>  | <b>प्रकाशन संख्या</b> |    |    |
|            | 2022-23  | 02                    |    |    |
|            | 2023-24  | 03                    |    |    |
|            | 2024-25  | 03                    |    |    |
| <b>8.</b>  | <b>छात्र-शिक्षक अनुपात (एम.एससी./पी.एच.डी.)</b>  |                       |    |    |
|            | <b>एमएससी</b>  | <b>पीएचडी</b>         |    |    |
|            | 2:1  | 2:1                   |    |    |
| <b>9.</b>  | <b>प्राकृतिक कृषि पाठ्यक्रम/अनुसंधान की स्थिति (छात्र)</b>   |                       |    |    |
|            | <ul style="list-style-type: none"> <li>प्राकृतिक खेती से संबंधित किए गए शोध:-05</li> </ul>   |                       |    |    |
| <b>10.</b> | <b>पेटेंट संख्या (पिछले 3 वर्ष)</b>  |                       |    |    |
|            | <b>वर्ष</b>  | <b>पेटेंट</b>         |    |    |
|            | 2022-23  | -                     |    |    |
|            | 2023-24  | 01                    |    |    |
|            | 2024-25  | -                     |    |    |
| <b>11.</b> | <b>किसानों के स्तर पर प्रौद्योगिकी अपनाने का प्रभाव (पिछले 3 वर्षों में)</b>   |                       |    |    |
|            | <ul style="list-style-type: none"> <li>पिछले वर्ष गोरखपुर, अयोध्या, झांसी, प्रयागराज आदि जिलों के 275 किसानों को मत्स्य पालन और जलीय कृषि के विभिन्न क्षेत्रों में प्रशिक्षित किया गया है।</li> <li>पंगास और आईएमसी के अच्छे गुणवत्ता वाले बीज उत्पादित किए जाते हैं और आस-पास के क्षेत्र के किसानों के बीच इनकी मांग बढ़ रही है।</li> <li>पहले, किसानों के बीच वैज्ञानिक मछली पालन प्रथाओं का ज्ञान बहुत कम था, लेकिन हमारे कॉलेज द्वारा आयोजित प्रशिक्षणों में भाग लेने के बाद, खेती की प्रथाओं में बदलाव आया है और अनुदेशात्मक मछली फार्म में उपलब्ध विभिन्न कृषि सुविधाओं का भी अवलोकन किया है।</li> </ul> |                       |    |    |
| <b>12.</b> | <b>छात्र प्लेसमेंट (पिछले 3 वर्ष)</b>  |                       |    |    |
|            | <b>वर्ष</b>  | <b>प्लेसमेंट</b>      |    |    |
|            | 2022-23  | 04                    |    |    |
|            | 2023-24  | 03                    |    |    |
|            | 2024-25  | 03                    |    |    |
| <b>13.</b> | <b>सशुल्क इंटरशिप (पिछले 3 वर्ष)</b>   |                       |    |    |
|            | <b>वर्ष</b>  | <b>संख्या</b>         |    |    |
|            | 2022-23  | 17                    |    |    |
|            | 2023-24  | 23                    |    |    |
|            | 2024-25  | 20                    |    |    |
| <b>14.</b> | <b>छात्र JRF/SRF (पिछले 3 वर्ष)</b>  |                       |    |    |
|            | <b>वर्ष</b>  | <b>JRF/SRF</b>        |    |    |

|            |   |   |
|------------|---|---|
|            | 2022-23   | - |
|            | 2023-24   | - |
|            | 2024-25   | - |
| <b>15.</b> | <b>इनोवेशन/इन्क्यूबेशन/स्टार्ट-अप/उद्यमिता केंद्र ( पिछले 3 वर्षों का वार्षिक विवरण)</b>  |   |
|            | -   |   |
| <b>16.</b> | <b>शैक्षणिक सुदृढीकरण के लिए भविष्य की योजनाएँ</b>  |   |
|            | <ul style="list-style-type: none"> <li>● विशेषज्ञ व्याख्यानों सहित शैक्षणिक और अनुसंधान सहयोग के लिए आईसीएआर संस्थानों (एनबीएफजीआर, सीआईएफई, सीआईएफआरआई) के साथ समझौता ज्ञापन ।</li> <li>● पीजी और पीएचडी कार्यक्रमों की शुरुआत कुशल मत्स्य पालन पेशेवरों का उत्पादन करने के लिए एईएम, एफईईएस और एएचएम में प्रशिक्षण।</li> <li>● गुणवत्तापूर्ण अनुसंधान को बढ़ावा देने के लिए प्रयोगशाला उन्नयन और अनुसंधान सुविधाओं के लिए विकासात्मक परियोजनाएं ।</li> <li>● रोजगार कौशल बढ़ाने और छात्र उद्यमिता को बढ़ावा देने के लिए एसडीपी का आयोजन करना ।</li> </ul> |   |

## आज़मगढ़ कृषि महाविद्यालय की प्रगति रिपोर्ट

|            |  |               |       |                               |                 |       |
|------------|--|---------------|-------|-------------------------------|-----------------|-------|
| <b>1.</b>  | <b>शिक्षण एवं तकनीकी पद विवरण</b>  |               |       |                               |                 |       |
|            | <b>शिक्षण स्टाफ</b>  |               |       | <b>तकनीकी एवं सहायक स्टाफ</b> |                 |       |
|            | स्वीकृत  | कार्यरत       | रिक्त | स्वीकृत                       | कार्यरत         | रिक्त |
|            | 34   | 25            | 9     | 9                             | 0               | 9     |
| <b>2.</b>  | <b>राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 का क्रियान्वयन (पिछले 3 वर्ष)</b>  |               |       |                               |                 |       |
|            | <ul style="list-style-type: none"> <li>आईसीएआर (ICAR) की 6वीं डीन समिति की सिफारिशों के अनुसार क्रियान्वयन किया गया है।</li> </ul>   |               |       |                               |                 |       |
| <b>3.</b>  | <b>छठी डीन समिति का क्रियान्वयन एवं चुनौतियाँ</b>  |               |       |                               |                 |       |
|            | <ul style="list-style-type: none"> <li>मल्टीपल एंट्री-एग्जिट सिस्टम (Multiple Entry-Exit System) से संबंधित मुद्दे हैं।</li> <li>एमओओसी (MOOCs) के लिए उचित दिशानिर्देश नहीं हैं।</li> </ul>   |               |       |                               |                 |       |
| <b>4.</b>  | <b>"विकसित भारत@2047" हेतु दृष्टिकोण</b>   |               |       |                               |                 |       |
|            | <ul style="list-style-type: none"> <li>शिक्षा, अनुसंधान और विस्तार को सशक्त करना।</li> <li>टिकाऊ और जलवायु-लचीली कृषिको बढ़ावा देना।</li> <li>प्रौद्योगिकी एकीकरण और डिजिटल बुनियादी ढाँचेका विकास।</li> <li>आर्थिक विकास और किसान सशक्ति करण सुनिश्चित करना।</li> </ul> |               |       |                               |                 |       |
| <b>5.</b>  | <b>छात्र नामांकन प्रवृत्ति (यूजी/पीजी/पीएच.डी- पिछले 3 वर्ष)</b>   |               |       |                               |                 |       |
|            | <b>वर्ष</b>  | <b>स्नातक</b> |       | <b>परस्नातक</b>               | <b>पीएच.डी.</b> |       |
|            | 2022-23  | 70            |       | 0                             | 0               |       |
|            | 2023-24  | 121           |       | 2                             | 0               |       |
|            | 2024-25  | 115           |       | 2                             | 0               |       |
| <b>6.</b>  | <b>विदेशी छात्रों का नामांकन (SAARC/ Non-SAARC)</b>  |               |       |                               |                 |       |
|            | -  |               |       |                               |                 |       |
| <b>7.</b>  | <b>प्रकाशन (NAAS <math>\geq</math> 6) – पिछले 3 वर्ष</b>   |               |       |                               |                 |       |
|            | <b>वर्ष</b>  |               |       | <b>प्रकाशन संख्या</b>         |                 |       |
|            | 2022-23  |               |       | 01                            |                 |       |
|            | 2023-24  |               |       | 05                            |                 |       |
|            | 2024-25  |               |       | 02                            |                 |       |
| <b>8.</b>  | <b>छात्र-शिक्षक अनुपात (एम.एस.सी./पीएच.डी.)</b>  |               |       |                               |                 |       |
|            | -  |               |       |                               |                 |       |
| <b>9.</b>  | <b>प्राकृतिक खेती पाठ्यक्रम / अनुसंधान की स्थिति</b>   |               |       |                               |                 |       |
|            | <ul style="list-style-type: none"> <li>बी.एससी. (ऑनर्स)कृषि कार्यक्रम में प्राकृतिक खेती का पाठ्यक्रम शुरू किया गया है।</li> <li>प्राकृतिक खेती पर 2 पी.एच.डी.छात्र अनुसंधान कर रहे हैं।</li> </ul>  |               |       |                               |                 |       |
| <b>10.</b> | <b>पेटेंट की संख्या (पिछले 3 वर्ष)</b>   |               |       |                               |                 |       |
|            | <b>वर्ष</b>  |               |       | <b>संख्या</b>                 |                 |       |
|            | 2022-23  |               |       | 00                            |                 |       |
|            | 2023-24  |               |       | 01                            |                 |       |
|            | 2024-25  |               |       | 00                            |                 |       |

|            |  |        |
|------------|--|--------|
| <b>11.</b> | <b>किसान स्तर पर अपनाया जाना एवं प्रभाव</b>  |        |
|            | <ul style="list-style-type: none"> <li>कॉलेज द्वारा विकसित तकनीकों को किसानों ने व्यापक रूप से अपनाया है।</li> </ul>   |        |
| <b>12.</b> | <b>छात्र प्लेसमेंट (पिछले 3 वर्ष)</b>  |        |
|            | वर्ष   | संख्या |
|            | 2022-23  | 00     |
|            | 2023-24  | 01     |
|            | 2024-25  | 04     |
| <b>13.</b> | <b>पेड इंटरशिप की संख्या</b>   |        |
|            | -  |        |
| <b>14.</b> | <b>छात्र JRF / SRF की संख्या (पिछले 3 वर्ष)</b>  |        |
|            | -  |        |
| <b>15.</b> | <b>नवाचार केन्द्र/इन्क्यूबेशन/स्टार्ट-अप/उद्यमिता</b>  |        |
|            | -  |        |
| <b>16.</b> | <b>शैक्षणिक सुदृढीकरण की भविष्य योजना</b>  |        |
|            | <ul style="list-style-type: none"> <li>विभिन्न कौशल, रोजगार और उद्यमिता-केंद्रित प्रमाण पत्र पाठ्यक्रम शुरू करना।</li> <li>नए शैक्षणिक कार्यक्रम, बी.एससी. एजी. (ऑनर्स) प्राकृतिक खेती को शुरू करना।</li> <li>विभिन्न विषयों में मास्टर डिग्री कार्यक्रम शुरू करना।</li> <li>ऑडियो-विजुअल सुविधाओं के साथ किसान प्रशिक्षण केंद्रकी स्थापना करना।</li> <li>सहयोग से कॉलेज परिसर में राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार/सम्मेलन आयोजित करना।</li> </ul> |        |

## सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय की प्रगति रिपोर्ट

| 1. | शिक्षण एवं तकनीकी पद विवरण   |         |       |                        |         |       |
|----|--|---------|-------|------------------------|---------|-------|
|    | शिक्षण स्टाफ   |         |       | तकनीकी एवं सहायक स्टाफ |         |       |
|    | स्वीकृत  | कार्यरत | रिक्त | स्वीकृत                | कार्यरत | रिक्त |
|    | 31   | 21      | 10    | 17                     | 11      | 06    |
| 2. | राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 का क्रियान्वयन (पिछले 3 वर्षों में)   |         |       |                        |         |       |
|    | <p><b>i) पाठ्यक्रम संशोधन और संरक्षण</b></p> <ul style="list-style-type: none"> <li>▪ सामुदायिक विज्ञान पाठ्यक्रम का गहन पुनरीक्षण</li> <li>▪ बहु विषयक शिक्षा का एकीकरण</li> <li>▪ कौशल-आधारित शिक्षा पर जोर</li> <li>▪ अनुभवात्मक शिक्षा और फील्ड वर्क का समावेश</li> <li>▪ संरचित हाथों से प्रशिक्षण का प्रावधान</li> </ul> <p><b>ii) नए कार्यक्रम और पाठ्यक्रमों की शुरुआत</b></p> <ul style="list-style-type: none"> <li>▪ बी.एस.सी. (ऑनर्स) फूड, न्यूट्रिशन एंड डाइटेटिक्स, 2023-24</li> <li>▪ डिप्लोमा पाठ्यक्रम (2): (1. फूड, न्यूट्रिशन एंड डाइटेटिक्स 2. वस्त्र निर्माण)</li> <li>▪ प्रमाण पत्र पाठ्यक्रम (2): (1. बेकरी और कन्फेक्शनरी 2. इवेंट मैनेजमेंट)</li> <li>▪ मूल्य वर्धित पाठ्यक्रम (4)</li> <li>▪ कौशल विकास मॉड्यूल (बेकरी, प्रिजर्वेशन, विकासात्मक मूल्यांकन, प्रारंभिक बाल देखभाल एवं मूल्यांकन, रंगाई)</li> </ul> <p><b>iii) मानव संसाधन विकास कार्यक्रम</b></p> <ul style="list-style-type: none"> <li>▪ शिक्षकों एवं तकनीकी स्टाफ की पदोन्नति</li> <li>▪ नवीन शिक्षण पद्धतियों का परिचय</li> <li>▪ डिजिटल प्लेटफॉर्म एवं ऑनलाइन मूल्यांकन पद्धति में प्रशिक्षण</li> <li>▪ राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय कार्यक्रमों में भागीदारी हेतु प्रोत्साहन</li> </ul> <p><b>iv) छात्र-केंद्रित शिक्षण पद्धति</b></p> <ul style="list-style-type: none"> <li>▪ रटकर याद करने की पद्धति से दक्षता-आधारित शिक्षा की ओर परिवर्तन</li> <li>▪ चॉइस-बेस्ड क्रेडिट सिस्टम का कार्यान्वयन</li> <li>▪ धीमी एवं तेज गति से सीखने वाले छात्रों के लिए विशेष सहयोग</li> <li>▪ परामर्श एवं मार्गदर्शन प्रणाली की स्थापना</li> <li>▪ प्रोजेक्ट आधारित शिक्षा, क्षेत्रीय असाइनमेंट एवं इंटरशिप पर बल</li> <li>▪ बहु-प्रवेश एवं निकास विकल्पों का कार्यान्वयन</li> </ul> <p><b>v) अनुसंधान एवं नवाचार को प्रोत्साहन</b></p> <ul style="list-style-type: none"> <li>▪ अंतःविषयी अनुसंधान परियोजनाओं को बढ़ावा</li> <li>▪ अनुसंधान अनुदान हेतु सहयोग</li> <li>▪ नवोन्मेषी पद्धतियों का प्रोत्साहन</li> <li>▪ सहयोगी अनुसंधान का संवर्धन</li> <li>▪ उत्कृष्ट अनुसंधान कार्यों को पहचान व पुरस्कार</li> </ul> |         |       |                        |         |       |

|           |   |                                   |  |                 |                 |
|-----------|---|-----------------------------------|--|-----------------|-----------------|
|           | <b>vi) विस्तार एवं जन संपर्क गतिविधियाँ</b> <ul style="list-style-type: none"> <li>▪ सामुदायिक भागीदारी कार्यक्रमों का आयोजन</li> <li>▪ जागरूकता कार्यक्रम, कार्यशाला व अभियान</li> <li>▪ किसान महिलाओं, युवाओं एवं समुदाय का क्षमता निर्माण</li> <li>▪ शैक्षणिक ज्ञान को सामाजिक आवश्यकताओं से जोड़ना</li> <li>▪ सामाजिक नवाचार एवं उद्यमिता का संवर्धन</li> </ul> <b>vii) डिजिटल प्लेटफॉर्म एवं MOOCs का उपयोग</b> <ul style="list-style-type: none"> <li>▪ डिजिटल अधिगम प्लेटफॉर्म को अपनाना</li> <li>▪ MOOCs का समावेश</li> <li>▪ ब्लेंडेड लर्निंग (परंपरागत कक्षा + ऑनलाइन)</li> <li>▪ शिक्षक एवं छात्रों का प्रशिक्षण</li> </ul>  |                                   |  |                 |                 |
| <b>3.</b> | <b>6वीं डीन समिति का क्रियान्वयन एवं चुनौतियाँ (2024-25 से लागू)</b>  |                                   |  |                 |                 |
|           | <b>छात्रों की चुनौतियाँ:</b> <ul style="list-style-type: none"> <li>▪ क्षेत्र-विशिष्ट नौकरी अवसरों की कमी</li> <li>▪ डिग्री/डिप्लोमा/प्रमाणपत्र की सीमित मान्यता</li> <li>▪ उद्योगों में जागरूकता की कमी से रोजगार अवसर सीमित</li> <li>▪ व्यवहारिक अनुभव की कमी</li> <li>▪ डिजिटल अधिगम सामग्री तक पहुंच एवं उपयोग की कमी</li> <li>▪ सिद्धांतात्मक ज्ञान का व्यावहारिक जीवन में प्रयोग करने में कठिनाई</li> </ul> <b>शिक्षकों की चुनौतियाँ:</b> <ul style="list-style-type: none"> <li>▪ अनुसंधान अनुदान प्राप्त करने में कठिनाई</li> <li>▪ सरकारी सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों का बढ़ता दबाव</li> <li>▪ नवीन पद्धतियों व तकनीकियों में सतत प्रशिक्षण की आवश्यकता</li> <li>▪ विस्तार एवं उद्यमिता गतिविधियों में छात्रों की भागीदारी हेतु प्रेरित करने में कठिनाई</li> <li>▪ प्रयोगशाला अवसंरचना व तकनीकी सहयोग की कमी</li> <li>▪ सरकारी एवं निजी क्षेत्रों से कमजोर संबंध</li> <li>▪ स्टाफ हेतु पर्याप्त डिजिटल सुविधाओं का अभाव</li> <li>▪ ए.पी.आई. आधारित पदोन्नति प्रणाली का दबाव</li> </ul> |                                   |  |                 |                 |
| <b>4.</b> | <b>"विकसित भारत@2047" हेतु दृष्टिकोण</b>  |                                   |  |                 |                 |
|           | <ul style="list-style-type: none"> <li>▪ सुरक्षित, पोषक एवं सस्ती खाद्य सामग्री की जागरूकता</li> <li>▪ कौशल, उद्यमिता, वित्तीय साक्षरता एवं नेतृत्व निर्माण</li> <li>▪ पर्यावरण-अनुकूल पद्धतियाँ, खाद्य स्थिरता, डिजिटल साक्षरता</li> <li>▪ ए.आई., आई.सी.टी., न्यूट्रिजेनॉमिक्स व डिजिटल हेल्थ टूल्स का उपयोग</li> <li>▪ ऐसे पेशेवर तैयार करना जो नीतियाँ प्रभावित करें व राष्ट्रीय स्वास्थ्य-पोषण कार्यक्रमों को बढ़ावा दें</li> </ul>   |                                   |  |                 |                 |
| <b>5.</b> | <b>छात्र नामांकन प्रवृत्ति (यूजी/पीजी/पीएच.डी- पिछले 3 वर्ष)</b>  |                                   |  |                 |                 |
|           | <b>वर्ष</b>   | <b>स्नातक (कम्प्युनिटी साइंस)</b> | <b>स्नातक (फूडन्यूट्रिशन एंड डाएटिक्स)</b> | <b>परस्नातक</b> | <b>पीएच.डी.</b> |
|           | 2022-23   | 04                                | -  | 03              | 02              |

|            |  |    |                |    |    |
|------------|--|----|----------------|----|----|
|            | 2023-24  | 08 | 11             | 03 | 05 |
|            | 2024-25  | 17 | 14             | 03 | 06 |
| <b>6.</b>  | <b>विदेशी छात्रों का नामांकन (SAARC/ Non-SAARC)</b>  |    |                |    |    |
|            | -  |    |                |    |    |
| <b>7.</b>  | <b>प्रकाशन (NAAS <math>\geq</math> 6) – पिछले 3 वर्ष:</b>  |    |                |    |    |
|            | <ul style="list-style-type: none"> <li>▪ 3</li> </ul>  |    |                |    |    |
| <b>8.</b>  | <b>छात्र-शिक्षक अनुपात (एम.एससी./पीएच.डी.)</b>   |    |                |    |    |
|            | <ul style="list-style-type: none"> <li>▪ एम.एससी.- 1:5</li> <li>▪ पीएच.डी.- 1:3</li> </ul>   |    |                |    |    |
| <b>9.</b>  | <b>प्राकृतिक खेती पाठ्यक्रम / अनुसंधान की स्थिति</b>   |    |                |    |    |
|            | <b>वर्ष</b>  |    | <b>संख्या</b>  |    |    |
|            | 2022-23  |    | लागू नहीं      |    |    |
|            | 2023-24  |    | हाँ            |    |    |
|            | 2024-25  |    | हाँ            |    |    |
| <b>10.</b> | <b>पेटेंट की संख्या (पिछले 3 वर्ष)</b>   |    |                |    |    |
|            | <b>वर्ष</b>  |    | <b>संख्या</b>  |    |    |
|            | 2022-23  |    | -              |    |    |
|            | 2023-24  |    | 02             |    |    |
|            | 2024-25  |    | 10             |    |    |
| <b>11.</b> | <b>किसान स्तर पर अपनाया जाना एवं प्रभाव</b>  |    |                |    |    |
|            | <ul style="list-style-type: none"> <li>▪ सिद्धौना गाँव में 1000+ महिला किसानों को प्रेरित किया गया</li> <li>▪ गाँव में पोषण सुधार एवं क्षयरोग रोगियों हेतु खाद्य उत्पाद विकसित</li> <li>▪ पोषण वाटिका एवं हर्बल गार्डन की स्थापना</li> <li>▪ महिला सशक्तिकरण – स्वयं सहायता समूह (कुछ ने सिलाई उद्योग, कुछ ने गोबर से पूजन सामग्री)</li> <li>▪ बाजरा प्रसंस्करण व मूल्यवर्धन प्रशिक्षण →राज्य स्तरीय पुरस्कार प्राप्त</li> <li>▪ मानसिक स्वास्थ्य, मनोवैज्ञानिक विकार एवं विशेष आवश्यकता विषय पर जागरूकता</li> </ul> |    |                |    |    |
| <b>12.</b> | <b>छात्र प्लेसमेंट (पिछले 3 वर्ष)</b>  |    |                |    |    |
|            | <b>वर्ष</b>  |    | <b>संख्या</b>  |    |    |
|            | 2022-23  |    | 02             |    |    |
|            | 2023-24  |    | 01             |    |    |
|            | 2024-25  |    | 01             |    |    |
| <b>13.</b> | <b>पेड इंटरशिप की संख्या</b>   |    |                |    |    |
|            | -  |    |                |    |    |
| <b>14.</b> | <b>छात्र JRF / SRF की संख्या (पिछले 3 वर्ष)</b>  |    |                |    |    |
|            | <b>वर्ष</b>  |    | <b>JRF/SRF</b> |    |    |
|            | 2022-23  |    | 05             |    |    |
|            | 2023-24  |    | 06             |    |    |
|            | 2024-25  |    | 05             |    |    |
| <b>15.</b> | <b>नवाचार केन्द्र/इन्क्यूबेशन/स्टार्ट-अप/उद्यमिता</b>  |    |                |    |    |

|     |  |
|-----|--|
|     | <p><b>i) बाजरा आधारित मूल्यवर्धित उत्पाद (उद्यमिता पहल)</b></p> <ul style="list-style-type: none"> <li>▪ खाद्य एवं पोषण विभाग द्वारा बाजरा आधारित पोषण उत्पाद</li> <li>▪ व्यंजन विकास, प्रसंस्करण, गुणवत्ता नियंत्रण, पैकेजिंग एवं विपणन में प्रशिक्षण</li> <li>▪ छात्रों व समुदाय विशेषकर महिलाओं व युवाओं को सशक्त करना</li> </ul> <p><b>ii) प्रयोगशाला नर्सरी स्कूल (आय-सृजन एवं उद्यमिता इकाई)</b></p> <ul style="list-style-type: none"> <li>▪ एचडीएफएस विभाग द्वारा संचालित</li> <li>▪ गुणवत्तापूर्ण शैशव शिक्षा + आय-सृजन</li> <li>▪ प्रायोगिक प्रशिक्षण व नवाचारपूर्ण कार्यक्रम</li> </ul> <p><b>iii) हर्बल साबुन व हैंडवॉश पहल</b></p> <ul style="list-style-type: none"> <li>▪ विस्तार शिक्षा एवं संचार प्रबंधन विभाग</li> <li>▪ समुदाय विशेषकर महिलाओं व युवाओं हेतु प्रशिक्षण</li> <li>▪ स्वच्छता जागरूकता एवं उद्यमिता</li> </ul> <p><b>iv) प्रस्तावित – डे-केयर सेंटर (2025)</b></p> <ul style="list-style-type: none"> <li>▪ एचडीएफएस विभाग</li> <li>▪ उच्च गुणवत्ता डे-केयर सेवा, प्रायोगिक प्रशिक्षण, सतत आय-सृजन</li> </ul> <p><b>v) प्रस्तावित – वस्त्र हस्तकरघा प्रयोगशाला</b></p> <ul style="list-style-type: none"> <li>▪ वस्त्र एवं परिधान विज्ञान विभाग</li> <li>▪ परंपरागत हस्तकरघा का संरक्षण व प्रशिक्षण</li> <li>▪ उद्यमिता एवं सामुदायिक कारीगरों का सहयोग</li> </ul> |
| 16. | <p><b>शैक्षणिक सुदृढीकरण की भविष्य योजना</b></p>   |
|     | <ul style="list-style-type: none"> <li>▪ पाठ्यक्रम का नियमित अद्यतन</li> <li>▪ सतत व्यावसायिक विकास कार्यक्रम</li> <li>▪ सामुदायिक उन्मुख अनुसंधान को प्रोत्साहन</li> <li>▪ प्रयोगशालाओं व डिजिटल पुस्तकालयों का उन्नयन</li> <li>▪ छात्रों का नामांकन बढ़ाने हेतु जन-जागरूकता</li> <li>▪ सरकारी एजेंसियों, एनजीओ, व उद्योगों से सहयोग</li> <li>▪ अनुभवात्मक शिक्षण पद्धतियाँ अपनाना</li> <li>▪ विस्तार एवं सामुदायिक भागीदारी कार्यक्रमों का विकास</li> <li>▪ नैतिक समिति का गठन एवं कार्यान्वयन</li> <li>▪ पाठ्यक्रम का डिजिटलीकरण</li> </ul>   |

## अवलोकन:

1. अधिकांश प्राध्यापक शोध कार्यों में संलग्न नहीं हैं; उन्हें केवल पठ पाठन के अलावा बल्कि शोध गतिविधियों में भी सक्रिय रूप से भाग लेना चाहिए।
2. जो प्राध्यापक शोध कार्यों में संलग्न हैं, वे वित्त पोषण एजेंसियों को उपयोगिता प्रमाण पत्र प्रस्तुत करने में विलंब कर रहे हैं, जिसके कारण वित्त पोषण एजेंसियों द्वारा धनराशि अवमुक्त करने में कठिनाइयाँ उत्पन्न हो रही हैं तथा परियोजनाएँ विलंबित हो रही हैं।
3. विश्वविद्यालय के पास अल्पकालिक, मध्यकालिक और दीर्घकालिक स्तर पर कोई स्पष्ट दृष्टिकोण नहीं है। इस विषय पर विश्वविद्यालय को ठोस कार्य करने की आवश्यकता है।
4. विद्यार्थी द्वारा किये जा रहे शोध कि गुणवत्ता में बहुत सुधार की आवश्यकता है।
5. वैज्ञानिकों द्वारा उत्पादों/प्रौद्योगिकियों के लिए बहुत कम पेटेंट दाखिल किए जा रहे हैं, जो चिंता का विषय है।
6. उत्पादों/प्रौद्योगिकियों के लाइसेंसिंग और व्यावसायीकरण के अभाव के कारण अधिकांश वैज्ञानिक अनभिज्ञ हैं, जिससे विश्वविद्यालय को बड़ी वित्तीय हानि हो रही है।
7. अत्यधिक कार्यभार एवं वैज्ञानिकों की कमी के कारण विद्यार्थियों द्वारा किए जा रहे शोध कार्य की गुणवत्ता में कमी पाई जा रही है।

## उपकार टीम के सुझाव:

1. नए और युवा प्राध्यापकों को उच्च-गुणवत्ता वाले शोध प्रस्ताव तैयार करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। इसके लिए उन्हें वैज्ञानिक लेखन और प्रस्ताव लेखन संबंधी विशेष प्रशिक्षण उपलब्ध कराया जाना आवश्यक है।
2. पेटेंट दाखिल करने तथा उसके लाइसेंसिंग/व्यावसायीकरण हेतु उपयुक्त प्रशिक्षण की व्यवस्था होनी चाहिए। यह पहल उत्पादक तकनीकों को किसानों तक पहुँचाने में सहायक होगी। साथ ही, प्रौद्योगिकी हस्तांतरण के लिए एक सुदृढ़ और सुव्यवस्थित तंत्र स्थापित किया जाना चाहिए।
3. छात्रों और प्राध्यापकों में उद्यमशीलता की सोच विकसित करने के लिए ठोस पहल की जानी चाहिए।
4. शैक्षणिक परिदृश्य को मजबूत बनाने के लिए एक दीर्घकालिक और व्यापक दृष्टिकोण आवश्यक है, जो तात्कालिक चुनौतियों से आगे बढ़कर रणनीतिक योजना और सतत विकास पर केंद्रित हो।
5. प्रत्येक महाविद्यालय को आवश्यकता-आधारित शोध हेतु प्रमुख क्षेत्रों की पहचान करने और उन क्षेत्रों में उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए।
6. विश्वविद्यालय को एक व्यापक मूल्यांकन डाँचे को अपनाने पर विचार करना चाहिए जो शोध योगदान की गुणवत्ता, गहराई और सामाजिक प्रभाव को पहचानते हों, और एक ऐसी शोध संस्कृति को बढ़ावा दें जो केवल प्रकाशन संख्या तक ही सीमित न हो।
7. शैक्षणिक उत्कृष्टता, अंतर सांस्कृतिक दृष्टिकोणों को बढ़ावा देने और वैश्विक शोध परिदृश्य को समृद्ध बनाने के लिए शोध में अंतर्राष्ट्रीय सहयोग को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।
8. शिक्षकों और छात्रों के लिए संरचनात्मक प्रतिपुष्टि पद्धति और अनुशंधान केंद्रों और विभागों की समय-समय पर समीक्षा करना।
9. प्राध्यापकों द्वारा नई तकनीकों एवं विषयों की उचित जानकारी छात्रों को दिए जाने में कमी महसूस की गई है, अतः प्राध्यापक अद्यतन होकर कक्षा में शैक्षणिक कार्य संपादित करें।
10. नवयुवा अध्यापकों को प्रति माह किसी एक नई तकनीक या नव-अन्वेषित विषय पर व्याख्यान देना अनिवार्य किया जाना चाहिए।



आ.न.दे.कृ.प्रौ.वि.वि. अयोध्या के वैज्ञानिकों के साथ उपकार टीम के सदस्यों द्वारा कृषि शिक्षा, शोध एवं प्रसार की समीक्षा



उपकार टीम के सदस्यों द्वारा मछली पालन व मखाना खेती पर शिक्षा, शोध एवं प्रसार की समीक्षा करते हुए

# कृषि शिक्षा और गुणवत्ता पूर्ण शोध समय की आवश्यकता



कृषि विश्वविद्यालय में बैठक में मौजूद अतिथि व अन्य। -कृषि विश्वविद्यालय

## संवाद न्यूज एजेंसी

कुमारगंज। आचार्य नरेंद्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय में दो दिवसीय समीक्षा बैठक हुई। बैठक में कृषि विवि में विगत तीन वर्षों के कृषि शिक्षा, शोध एवं प्रसार के कार्यों की समीक्षा की गई।

बैठक की अध्यक्षता कर रहे उत्तर प्रदेश कृषि अनुसंधान परिषद (उपकार) के महानिदेशक डॉ. संजय सिंह ने कहा कि विश्वस्तरीय कृषि शिक्षा, गुणवत्ता पूर्ण शोध समय की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि उपकार कृषि शिक्षा, शोध एवं प्रसार को बढ़ावा देने के लिए कटिबद्ध है। उन्होंने

## आचार्य नरेंद्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय में हुई दो दिवसीय समीक्षा बैठक

छात्रों में उद्यमिता को बढ़ावा दिए जाने की वकालत करते हुए विश्व स्तरीय शोध करने पर बल दिया।

समीक्षा बैठक में सुझाव देते हुए प्रो. परमेंद्र सिंह ने कहा कि आज मौसम परिवर्तन की चुनौती से हो रहे नुकसान को कम करने की दिशा में हम सबको मिलकर काम करना होगा। इस अवसर पर डॉ. सुशील कुमार, डॉ. राम बटुक सिंह, डॉ. धीरेंद्र कुमार सिंह मौजूद रहे।

## विश्वस्तरीय कृषि शिक्षा, गुणवत्ता युक्त शोध समय की मांग : डा. संजय

जासं • कुमारगंज (अयोध्या): आचार्य नरेंद्रदेव कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय में समीक्षा बैठक हुई। गत तीन वर्षों की कृषि शिक्षा, शोध एवं प्रसार के कार्यों की समीक्षा की गई। अध्यक्षता उत्तर प्रदेश कृषि अनुसंधान परिषद के महानिदेशक डा. संजय सिंह ने की। विज्ञानी मखाना परिक्षेत्र का निरीक्षण करने भी गए।

महानिदेशक डा. सिंह ने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू होने के बाद कृषि विवि में भी इसे लागू करने की प्राथमिकता होनी चाहिए। बताया कि उत्तर प्रदेश कृषि अनुसंधान परिषद (उपकार) प्रदेश में कृषि शिक्षा, शोध एवं प्रसार को बढ़ावा देने के लिए प्रतिबद्ध है। इसके लिए सरकार गुणवत्तापूर्ण शोध करा रही है। कई परियोजनाएं संचालित हो रही हैं। इससे किसानों के जीवन स्तर को उठाया जा सकेगा। उन्होंने छात्रों में उद्यमिता को बढ़ावा दिए जाने पर बल दिया। सुझाव देते हुए उपकार के कृषि शिक्षा एवं तकनीकी हस्तान्तरण के उप निदेशक प्रो. परमेंद्र सिंह ने कहा कि आज मौसम परिवर्तन की चुनौती से हो रहे कृषि एवं किसानों के नुकसान को कम करने की दिशा में कार्य करना होगा। इस अवसर पर उपकार के शोध के उप निदेशक डा. राजर्षि कुमार गौड़ ने कहा कि मछली पालन, मशरूम उत्पादन, मधुमक्खी पालन के साथ ही विभिन्न फसलों एवं सब्जियों के गुणवत्ता पूर्ण बीज के उत्पादन की आवश्यकता है। इस अवसर पर डा. सुशील कुमार, निदेशक शोध डा. राम बटुक सिंह, निदेशक प्रसार डा. धीरेंद्र कुमार सिंह आदि मौजूद रहे।



उत्तर प्रदेश कृषि अनुसंधान परिषद

द्वारा

आचार्य नरेंद्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय,

कुमारगंज, अयोध्या

का भ्रमण करने और समीक्षा के उपरान्त की

कार्यवृत्त

अनुसंधान प्रगति रिपोर्ट



आचार्य नरेंद्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, कुमारगंज का मुख्य द्वार

## अनुसंधान प्रगति रिपोर्ट

आचार्य नरेंद्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या के दौरे की कार्यवृत्त 22-23 अगस्त 2025 को, उत्तर प्रदेश कृषि अनुसंधान परिषद [उपकार], लखनऊ के निम्नलिखित सदस्यों ने आचार्य नरेंद्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या का दौरा किया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय परिसर और संबद्ध कृषि विज्ञान केंद्र [के.वी.के] में पिछले तीन वर्षों [2022-2025] के अनुसंधान, शिक्षा और विस्तार गतिविधियों की समीक्षा की गई।

1. डॉ. संजय सिंह, महानिदेशक
2. डॉ. राजर्षि कुमार गौड़, उप महानिदेशक [अनु. परि. प्र. और सम.]
3. डॉ. परमेश्वर सिंह, उप महानिदेशक [कृ. शि. और प्रौ. ह.]

| 1. वित्त पोषित परियोजनाओं की संख्या: 41   |   |               |  |   |
|---|---|---------------|--|---|
|   | All India Co-Ordinated Research Projects (75% ICAR share and 25% State share) | U.P.C.A.R.    | Research Projects Financed by RKVY/SADP/Mandi Parishad | Research Projects Financed by other National/State Agencies |
|   | <b>18</b>   | <b>9</b>      | <b>6</b>   | <b>8</b>  |
| परियोजना की कुल लागत (रुपये में): <b>8104.89 Lakhs</b>  |   |               |  |   |
|   | All India Co-Ordinated Research Projects (75% ICAR share and 25% State share) | U.P.C.A.R.    | Research Projects Financed by RKVY/SADP/Mandi Parishad | Research Projects Financed by other National/State Agencies |
|   | <b>55.20</b><br><b>1220.73</b>  | <b>127.18</b> | <b>6547.31</b>   | <b>154.47</b>   |
| 2. प्रमुख अनुसंधान उपलब्धियाँ   |   |               |  |   |
| <ul style="list-style-type: none"> <li>• आलू पर एआईसीआरपी एएनडीयूएटी अयोध्या केंद्र को फसल सुधार, फसल उत्पादन और फसल सुरक्षा के विषयों में 2022-23 से 2024-25 तक कुल 57 प्रायोगिक परीक्षण आवंटित किए गए थे, और केंद्र ने 100% प्रयोगों को सफलतापूर्वक संचालित किया है।</li> <li>• अयोध्या केंद्र में निम्नलिखित जीनोटाइप का मूल्यांकन किया गया और किस्मों के रूप में जारी किया गया: शीघ्र रोपण और ताप सहनशीलता के लिए कुफरी किरण, प्रसंस्करण और खाने के उद्देश्य के लिए कुफरी संगम, प्रसंस्करण के लिए कुफरी फ्रायोम, कुफरी चिप्सोना 4 और कुफरी चिप्सोना-5, एंटीऑक्सीडेंट की प्रचुर मात्रा वाली कुफरी जामुनिया और कुफरी नीलकंठ, खाने के उद्देश्य के लिए कुफरी भास्कर, कुफरी लोहित और कुफरी सुख्यति का भी इस केंद्र में परीक्षण किया गया। 42वीं एआईसीआरपी आलू समूह बैठक के दौरान, 4 प्रविष्टियाँ जारी की गईं।</li> <li>• आलू की फसल में एफिड आबादी की निगरानी से पता चला है कि पूर्वी उत्तर प्रदेश में आलू</li> </ul> |   |               |  |   |

उगाने के मौसम में जनवरी के पहले सप्ताह (लगभग 7 जनवरी) के दौरान एफिड आबादी आर्थिक सीमा स्तर (20 एफिड/100 संयुक्त पत्तियां) को पार कर जाती है। यह जानकारी आलू की फसल में वायरस फैलाने वाले इन एफिड्स के प्रबंधन के लिए कीटनाशकों के किफायती और आवश्यकता-आधारित उपयोग में सहायक है।

- *Casuarina equisetifolia* और *D. sissoo* आधारित कृषि सिल्विकल्चर प्रणाली के तहत धान की किस्म सरजू-52 ने खरीफ के दौरान अधिकतम अनाज उपज दिखाई, जबकि सरसों की किस्म आरएच 725 ने दोनों प्रणालियों में रबी के दौरान बेहतर प्रदर्शन किया।
- उड़द (हरा चना) किस्म नरेंद्र उर्द-1 ने दोनों *Casuarina equisetifolia* और *D. sissoo* कृषि वानिकी प्रणालियों के तहत उल्लेखनीय रूप से बेहतर अनाज उपज दर्ज की।
- *Casuarina equisetifolia* और *D. sissoo* आधारित कृषि-सिल्विकल्चर प्रणाली के अंतर्गत जैविक उर्वरकों के प्रयोग में, दोनों प्रणालियों के अंतर्गत एफवाईएम 10 प्रति हेक्टेयर के प्रयोग से धान (किस्म DBW 52) और गेहूं (किस्म DBW 187) की अनाज उपज अधिकतम पाई गई।
- बागवानी के लिए राजपत्र और अधिसूचना और किस्मों का विमोचन, अर्थात् नरेंद्र आंवला-25, नरेंद्र आंवला-26, नरेंद्र बेल-8, नरेंद्र बेल-10, नरेंद्र बेल-11, नरेंद्र बेल-17, नरेंद्र बेर-2।
- आशाजनक जीनोटाइप: आंवला: नरेंद्र आंवला-27, नरेंद्र आंवला-29, नरेंद्र आंवला-31, नरेंद्र आंवला-32, नरेंद्र आंवला-33 और नरेंद्र आंवला-34
- बाल: एनडी/एएच-9, एनडी/एएच-11, एनडी/एएच-12, एनडी/एएच-16, एनडी/एएच-21, एनडी/एएच-22, एनडी/एएच-25, एनडी/एएच-26, एनडी/एएच-27 और एनबी-19, एनबी-21, एनबी-22, एनबी-23।
- बेर: नरेंद्र बेर चयन-9, नरेंद्र बेर चयन-10, नरेंद्र बेर चयन-11, नरेंद्र बेर चयन-12, नरेंद्र बेर चयन-13, नरेंद्र बेर चयन-14, नरेंद्र बेर चयन-15, नरेंद्र बेर चयन-16।
- जामुन: नरेंद्र जामुन-6, नरेंद्र जामुन-7, नरेंद्र जामुन-8, नरेंद्र जामुन-9
- दो नई किस्में विकसित: नरेंद्र हल्दी-4 (एनडीएच-11) आईसी-0645851 और नरेंद्र हल्दी-5 (एनडीएच-98) आईसी-564498
- लौकी की नई किस्में जारी: नरेंद्र कामना (एनडीबीजी-16) और नरेंद्र सीता (एनडीबीजीएच-14-10), बैंगन (लंबा): नरेंद्र सुयोग (एनडीबी सफेद-1), हरी सरसों: नरेंद्र सरसों साग-1।
- एआईसीआरपी में बहु-स्थानीय परीक्षण के लिए 01 मक्का ओपीवी (एनडीएमसी 02) का योगदान दिया गया है और एआईसीआरपी एवं राज्य में बहु-स्थानीय परीक्षण के लिए एक और मक्का ओपीवी तैयार है।
- मक्का-गेहूं प्रणाली में खरपतवार प्रबंधन विकल्पों के लिए अनुशंसा: खरीफ मक्का में 25-30

दिनों पर एट्राजीन 50% WP @ 500 ग्राम/हेक्टेयर / पाइरोक्सासल्फोन @ 127 ग्राम/हेक्टेयर (पीई) एफबी टेम्बोट्रियोन 34.4% एससी @ 120 ग्राम/हेक्टेयर या मेसोट्रियोन + एट्राजीन @ 300 ग्राम/हेक्टेयर (पीओई) का प्रयोग।

- रोग विज्ञान: चावल के शीथ ब्लाइट के प्रबंधन के लिए कवकनाशी टेबुकोनाज़ोल 25.9% ईसी @ 1.5 मिली/ली की अनुशंसा की जाती है। (58वीं वार्षिक चावल समूह बैठक, 2023 की मसौदा कार्यवाही, पृष्ठ 68)। कीट विज्ञान: वनस्पति कीटनाशक नीमजल 1% ईसी @ 2 मिली/ली (25-30 दिन) + नीम तेल @ 10 मिली/ली (45-50 दिन) के साथ ट्राइफ्लुमेज़ोपाइरिम 10% एससी @ 0.48 मिली/ली (60-65 दिन) का संयोजन चावल के तना छेदक और पत्ती मोड़क के प्रबंधन के लिए बहुत प्रभावी पाया गया। (58वीं वार्षिक चावल समूह बैठक की मसौदा कार्यवाही, 2023, पृ. 69), कृषि विज्ञान: 4% एन के बजाय 16% एन के साथ नैनो यूरिया का उपयोग किया जाना है जिससे चावल की उपज अधिक पाई गई।
- नई किस्मों का विकास: Brahmi (*Bacopa monneri*)-DBM-4; Opium Poppy(*Papaver somnifera*)-NBMHT-4; Turmeric (*Curcuma longa*)-Narendra Haldi -5; Basil(*Ocimum basilicum*)-MOB-10.
- उन्नत जल प्रबंधन पद्धति; चेक बेसिन (10x10 मीटर) के माध्यम से तालाब के पानी के गायब होने के 1-4 दिनों के बाद प्रत्येक सिंचाई में 7 सेमी पानी देने से चावल की उच्च उपज क्रमशः शीर्ष, मध्य और अंतिम सिरे पर 51.6, 48.4 और 48.0 क्विंटल प्रति हेक्टेयर दर्ज की गई, जो किसानों की पद्धति (बाढ़/खेत से खेत सिंचाई द्वारा प्रत्येक सिंचाई में 10-12 सेमी पानी) की तुलना में लगभग 24.4-27.0% अधिक थी और इससे लगभग 35.00% सिंचाई जल की बचत भी हुई। बेहतर जल प्रबंधन पद्धति में किसानों की पद्धति की तुलना में WEE का उच्च मान 60.9 से 67.4 किग्रा/हेक्टेयर/मिमी की सीमा में भी देखा गया।
- उन्नत जल प्रबंधन पद्धति में किसानों की पद्धति की तुलना में WEE का उच्च मान 60.9 से 67.4 किग्रा/हेक्टेयर/मिमी की सीमा में भी देखा गया।
- उन्नत जल प्रबंधन पद्धति में किसानों की पद्धति की तुलना में WEE का उच्च मान 60.9 से 67.4 किग्रा/हेक्टेयर/मिमी की सीमा में भी देखा गया। चने और सरसों की अंतर-फसल (4:1) सर्वोत्तम पाई गई है क्योंकि इससे 47.8 क्विंटल/हेक्टेयर की उच्चतम समतुल्य गेहूँ उपज प्राप्त हुई। इसके बाद मसूर और सरसों की अंतर-फसल (4:1) और शुद्ध चने की अंतर-फसल का स्थान आता है, जिसमें समतुल्य गेहूँ उपज क्रमशः 44.9 और 43.0 क्विंटल/हेक्टेयर थी। सरसों और चने की अंतर-फसल
- सरसों के साथ चने की अंतरफसल (4:1) सर्वोत्तम पाई गई है क्योंकि इसने 47.8 क्विंटल/हेक्टेयर की उच्चतम समतुल्य गेहूँ उपज दी, इसके बाद सरसों के साथ मसूर की अंतरफसल (4:1) और चने की शुद्ध फसल है जिसमें समतुल्य गेहूँ उपज क्रमशः 44.9 और

|    |  |
|----|--|
|    | <p>43.0 क्विंटल/हेक्टेयर थी। चने के साथ सरसों की अंतरफसल ने 2.69 के उच्चतम लाभ लागत अनुपात के साथ प्रति हेक्टेयर 74075.00 रुपये का अधिकतम शुद्ध लाभ दर्ज किया।</p> <ul style="list-style-type: none"> <li>• पारंपरिक किसान प्रथा, जिसमें प्रति वर्ष 1,16,224.00 रुपये प्रति हेक्टेयर का शुद्ध लाभ दर्ज किया गया था, की तुलना में मत्स्य पालन वाली एकीकृत कृषि प्रणाली ने प्रति वर्ष 2,23,648.00 रुपये प्रति हेक्टेयर का उच्चतम शुद्ध लाभ दर्ज किया।</li> <li>• चावल के भूसे का उपयोग करके दो श्रेणियों के उत्पाद विकसित किए गए: ब्रेडिंग विधि द्वारा हैंडबैग, फाइल कवर, स्टोरेज बॉक्स, डोर मैट और इसे लुगदी में परिवर्तित करके प्लांट ग्रोवर, शिक्षण सहायक सामग्री, कोस्टर, फ्रिज मैग्नेट।</li> <li>• शारीरिक मार्करों पर शेष परीक्षण किए गए जीनोटाइप की तुलना में DBW 187, DBW22, PBW 373 और UN 1 सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले गेहूं जीनोटाइप पाए गए।</li> <li>• उत्तर प्रदेश के चयनित जिलों (अयोध्या, लखनऊ, गोरखपुर और प्रयागराज) में शहरी और ग्रामीण दोनों आवासों से 16 ऑर्डर और 49 परिवारों से संबंधित 128 पक्षी प्रजातियां दर्ज की गईं।</li> <li>• ग्रामीण क्षेत्रों में लगातार अपने शहरी समकक्षों की तुलना में अधिक संख्या में प्रजातियां पाई गईं। लखनऊ, 54 (शहर) बनाम 116 (ग्रामीण); प्रयागराज, 47 (शहर) बनाम 109 (ग्रामीण); गोरखपुर 59 (शहर) बनाम 101 (ग्रामीण); और अयोध्या 60 (शहर) बनाम 104 (ग्रामीण)।</li> <li>• बस्तियों के करीब स्थित आर्द्रभूमि, जैसे पार्वती अर्गा पक्षी अभयारण्य और पिपरा ताल, पर अपशिष्ट डंपिंग, जल दोहन और प्रदूषण जैसे प्रत्यक्ष मानवीय प्रभाव पड़ने की अधिक संभावना है। इसी प्रकार, राजमार्गों के निकट आर्द्रभूमि—विक्षोभ की तीव्रता को प्रभावित करती है। संरक्षित वन के भीतर स्थित सुहेलवा वन्यजीव अभयारण्य जैसे दूरस्थ स्थल, अलगाव और सापेक्ष सुरक्षा से लाभान्वित होते हैं।</li> <li>• "न्यूनतम चिंता" श्रेणी (90%), "संकटग्रस्त" (3%) और "संवेदनशील" (2%)।</li> <li>• अध्ययन अवधि के दौरान सरयू नदी में 42 और गोमती नदी में 46 मत्स्य प्रजातियाँ दर्ज की गईं।</li> <li>• विश्वविद्यालय में पहली बार मखाने की खेती शुरू हुई है। यह कदम राज्य की कृषि क्रांति में एक नया अध्याय लिखेगा और किसानों के लिए एक बड़ा अवसर होगा।</li> </ul> |
| 3. | नया अवलोकन   |
|    | <ul style="list-style-type: none"> <li>• आलू की फसल में सक्रिय कीटों के रूप में तीन एफिड प्रजातियों, अर्थात् <i>Myzus persicae</i>, <i>Aphis spiraeicola</i>, और <i>Rhopalosiphum rufiabdominalis</i> की पहचान की गई और उनकी व्यापकता की पुष्टि की गई, जो आलू की फसल में विषाणु जनित रोग फैला सकते हैं।</li> <li>• उत्तर प्रदेश के पूर्वी मैदानी क्षेत्र में आलू की फसल के नमूनों में आलू विषाणु X (PVX) और आलू विषाणु Y (PVY) की पहचान की गई है।</li> </ul>   |

|  |  |
|--|--|
|  | <ul style="list-style-type: none"> <li>• शीशम के वृक्ष सुधार परियोजना के अंतर्गत, PS-52 क्लोन में वृक्ष की ऊँचाई सबसे अधिक थी, उसके बाद L-5, L-1 और PS-38 और वृक्ष की ऊँचाई सबसे अधिक L-5 थी, जबकि dbh PS-52 में सबसे अधिक और उसके बाद L-5 में सबसे अधिक दर्ज किया गया।</li> <li>• वन उत्पादकता संस्थान, रांची, उपकेंद्र हाजीपुर, बिहार से एकत्रित <i>Melia dubia</i> जर्मप्लाज्म पर एक नए प्रयोग में, <i>Melia dubia</i> के वृक्ष की ऊँचाई और dbh MDP-4 में और उसके बाद MDP-3 में सबसे अधिक दर्ज किया गया।</li> <li>• Aloe vera (<i>Aloe barbadensis</i>) और Sataver (<i>Asparagus racemosus</i>) के जर्मप्लाज्म का मूल्यांकन।</li> <li>• अफीम पोस्त (<i>Papaver somniferum</i>) की उच्च उपज और गुणवत्ता के लिए आशाजनक प्रजातियों का एमएलटी मूल्यांकन:</li> <li>• लेमनग्रास (<i>Cymbopogon flexuosus var. flexuosus</i>), Aloe (<i>Aloe barbadensis</i>) (IVT), Brahmi (<i>Bacopa monnuri</i>) MLT, Mandukaparni (<i>Centella asiatica</i>) की एमएलटी में आशाजनक प्रजातियों का मूल्यांकन।</li> <li>• उत्तर प्रदेश के विभिन्न जिलों से देशी सुगंधित लघु दाना (एएसजी) चावल जर्मप्लाज्म का संग्रह, सर्वेक्षण के दौरान एकत्र किए गए 45 सुगंधित लघु दाना (एएसजी) जर्मप्लाज्म की खेती, एएसजी जर्मप्लाज्म का डेटा रिकॉर्डिंग और मूल्यांकन, स्थानीय पारंपरिक एएसजी जर्मप्लाज्म का शुद्धिकरण।</li> </ul> |
|--|--|

#### 4. नया नवाचार

|  |  |
|--|--|
|  | <ul style="list-style-type: none"> <li>• आलू पर अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना (एआईसीआरपी), अयोध्या केंद्र, आलू पर अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना (एआईसीआरपी) की परियोजना समन्वय इकाई के सहयोग से, आस-पास के क्षेत्र के आलू किसानों के लिए समाचार पत्रों के माध्यम से INDO-BLIGHTCAST मॉडल का उपयोग करते हुए आलू के पछेती झुलसा रोग की चेतावनी और उसके प्रबंधन संबंधी परामर्श जारी करता है।</li> <li>• <i>Casuarina equisetifolia</i> और <i>Dalbergia sissoo</i> आधारित कृषि-सिल्वी प्रणालियों के अंतर्गत धान और गेहूँ की बेहतर वृद्धि और उपज प्राप्त करने के लिए, एनपीके की 50% अनुशंसित खुराक के साथ 10 टन एफवाईएम प्रति हेक्टेयर के प्रयोग को मानकीकृत किया गया है।</li> <li>• बायोएथेनॉल उत्पादन के लिए उपयुक्त लाइन की पहचान हेतु मक्का जर्मप्लाज्म का मूल्यांकन, गतिविधि: उच्च बायोएथेनॉल उत्पादन के लिए उपयुक्त लाइन की पहचान हेतु उपलब्ध जर्मप्लाज्म का मूल्यांकन किया जाएगा और इसमें एडीएफ, एनडीएफ, हेमीसेल्यूलोज, लिग्निन सामग्री, उच्च भूसा उपज जैसे लक्षण देखे जाएँगे।</li> <li>• एलोवेरा की नई आशाजनक प्रविष्टियाँ प्रस्तुत की गईं - Aloe vera- Leaf spot resistant/ tolerant- IC- 283655, IC- 283610 and IC- 310609; Soft rot resistant/ tolerant -</li> </ul> |
|--|--|

|     |   |
|-----|---|
|     | <p>IC- 285626; High gel content – IC- 310596 and IC-285629; Kalmegh- Root rot resistant/ tolerant- IC- 471994; Satavar –Root rot resistant – NDAS-101 and NDAS-102; Opium poppy - Downy mildew resistant/ tolerant-ND-21, ND-4-1 and ND-16</p> <ul style="list-style-type: none"> <li>• एरोमेटिक आयल डिस्टिलेशन इकाई की स्थापना, औषधीय एवं एरोमेटिक नर्सरी की स्थापना, हर्बल उद्यान का विकास</li> </ul>   |
| 9.  | <p><b>पेटेंट एवं इसके व्यावसायीकरण की स्थिति</b></p> <ul style="list-style-type: none"> <li>• बिना किसी कृत्रिम परिरक्षक के गुड़हल आधारित आरटीएस का विकास। (आवेदन: 202411073790)। स्थिति: प्रकाशित।</li> </ul>  |
| 10. | <p><b>उत्पाद/प्रक्रिया विकास एवं व्यावसायीकरण की स्थिति</b></p> <ul style="list-style-type: none"> <li>• बेल में उच्च घनत्व रोपण: बेल में, 8.0 x 5.0 मीटर पेड़ों के अंतराल के साथ 25% छंटाई से नियंत्रित और 50% छंटाई की तुलना में उच्चतम उपज (45.97 किग्रा/पेड़) प्राप्त होती है। इसलिए, उत्तर प्रदेश में व्यावसायिक खेती के लिए 8.0x5.0 मीटर पेड़ों के अंतराल के साथ 25% छंटाई की सिफारिश की जाती है।</li> <li>• आंवला, किस्म NA-7 गुजरात और उत्तर प्रदेश के लिए अनुशंसित है।</li> <li>• बेल, किस्म NB-9 और NB-5 जो उत्तर प्रदेश में लोकप्रिय हैं, हरियाणा, गुजरात और राजस्थान राज्यों में व्यावसायिक रोपण के लिए अनुशंसित हैं।</li> <li>• बेर, नरेंद्र बेर सेल-1 उत्तर प्रदेश के लिए और गोमा कीर्ति गुजरात क्षेत्रों के लिए अनुशंसित है।</li> <li>• नई प्रौद्योगिकियां विकसित की गईं: एलोवेरा की खेती के लिए उत्पादन तकनीक, ईसबगोल की खेती के लिए उत्पादन तकनीक, तुलसी की खेती के लिए उत्पादन तकनीक, अफीम पोस्त के प्रमुख रोगों (बैक्टीरियल ब्लाइट/ रूट रॉट और डाउनी फफूंद) के लिए आईडीएम तकनीक, सहयोगी केंद्रों (एएनडीयूएटी, अयोध्या, बीएयू, इस्लामपुर, जेएनकेवीवी, जबलपुर, आरपीसीएयू पूसा) द्वारा मीठी तुलसी के पर्णिय (अल्टरनेरिया लीफ स्पॉट) और मृदा जनित रोगों (मैक्रोफोमिनाफेजोलिना) के प्रबंधन के लिए विकसित तकनीक को सिफारिश के लिए अनुमोदित किया गया। रोपण के समय ट्राइकोडर्मा हरजियानम के टैल्क-आधारित फॉर्मूलेशन के साथ-साथ 2% स्यूडोमोनास फ्लोरोसेंस से समृद्ध एफवाईएम @10 टन/हेक्टेयर के साथ मिट्टी का उपचार करें। सहयोगी केंद्र एमपीयूएटी, उदयपुर, आरवीएसकेवीवी, सीओएच मंदसौर, एनडीयूएटी, अयोध्या द्वारा अफीम पोस्त की प्रमुख बीमारियों (डाउनी फफूंदी और बैक्टीरियल ब्लाइट/रूट रॉट) के खिलाफ सिफारिश के लिए अनुमोदित किया गया था। बुवाई से 4-5 दिन पहले टी. हरजियानम + स्यूडोमोनास फ्लोरोसेंस @ 2% से समृद्ध एफवाईएम (500 ग्राम/एम2) का कुंड मिट्टी में प्रयोग + स्ट्रेप्टोसाइक्लिन सल्फेट @ 0.03% (300 पीपीएम) और मेटालैक्सिल @ 2.5 ग्राम/किग्रा के साथ बीज उपचार, इसके बाद रोग के लक्षण दिखाई</li> </ul> |

|     |   |
|-----|---|
|     | <p>देने पर टी. हरजियानम + स्यूडोमोनास फ्लोरोसेंस @ 0.5% का छिड़काव करें, फिर स्ट्रेप्टोसाइक्लिन सल्फेट @ 0.03% (300 पीपीएम) और मेटालैक्सल @ 0.25% के साथ 15 दिनों के अंतराल पर दूसरा और तीसरा छिड़काव डाउनी फफूंदी और कॉलर रॉट के प्रबंधन में न्यूनतम घटना के साथ प्रभावी पाया गया 16.42% और 8.88%। इस उपचार से उच्च मांस लेटेक्स उपज (27.8 किग्रा/हेक्टेयर), बीज उपज (848.45 किग्रा/हेक्टेयर) और कैप्सूल भूसी उपज के साथ उच्च मॉर्फिन सामग्री (11.67%) और उच्चतम बी:सी अनुपात (1:8.68) भी प्राप्त हुई।</p> <ul style="list-style-type: none"> <li>• एलोवेरा के पर्ण रोगों (अल्टरनेरिया और कोलेटोट्राइकम लीफ स्पॉट) और मृदु सड़न के प्रबंधन के लिए विकसित तकनीक को सिफारिश के लिए मंजूरी दी गई है। रोपण और रोग के लक्षणों की शुरुआत के समय 2% की दर से ट्राइकोडर्मा हार्जियानम के साथ स्यूडोमोनास फ्लोरोसेंस टैल्क-आधारित फॉर्मूलेशन के साथ गोबर की खाद (1.0 किग्रा/एम<sup>2</sup>) का मिट्टी में प्रयोग। टैल्क-आधारित फॉर्मूलेशन पर 2% पी. फ्लोरोसेंस और 0.3% नीम तेल के तीन छिड़काव से रोग के पर्ण धब्बे का प्रकोप 76 प्रतिशत और मृदु सड़न 43 प्रतिशत कम हो गया। इससे उपज भी 23 प्रतिशत और लागत भी बढ़ गई। लाभ अनुपात 5.5 प्राप्त हुआ।</li> <li>• अफीम पोस्त के कोमल फफूंदी और पत्ती धब्बा रोग के प्रबंधन के लिए 30, 45, 65 और 75 दिन पर ट्राइकोडर्मा विराइड से समृद्ध 2.0% (50 किग्रा/हेक्टेयर) वर्मीकम्पोस्ट (2.5 टन/हेक्टेयर) का नाली में प्रयोग + 5.0% (50 मिली/ली) “बीजामृत” से बीज उपचार और उसके बाद 0.2% (2 मिली/ली) नीम तेल का छिड़काव करने की सिफारिश की गई थी।</li> <li>• बुवाई से 4-5 दिन पहले टी. हरजियानम से समृद्ध 2.0% (20 किग्रा/हेक्टेयर) गोबर की खाद (5 टन/हेक्टेयर) का नाली में प्रयोग + 5.0% (50 मिली/ली) “बीजा अमृत” से बीज उपचार और किसी भी रोग के लक्षण दिखाई देने पर, 15 दिनों के अंतराल पर 10.0% (100 मिली/ली) नीम पत्ती अर्क के साथ तीन पर्णिय छिड़काव ईसबगोल के कोमल फफूंदी और विल्ट के प्रबंधन के लिए अनुशंसित।</li> <li>• जिबरेलिक एसिड (GA3) @0.2% (2 मिली/लीटर) और ट्रायकोन्टानॉल (TRIA) @0.2% (2 मिली/लीटर) का पर्णिय छिड़काव, अफीम पोस्त की अधिकतम बीज उपज (1078.70 किग्रा/हेक्टेयर) और लेटेक्स उपज (31.33 किग्रा/हेक्टेयर) के साथ उच्च B:C अनुपात (2.91) के साथ, नियंत्रण के विरुद्ध प्रभावी पाया गया।</li> <li>• पोर्टेबल सोलर पैनल क्लीनर विकसित किया गया।</li> </ul> |
| 11. | नवप्रवर्तन केंद्र/इन्क्यूबेशन केंद्र/स्टार्ट-अप/उद्यमिता  |
|     | <ul style="list-style-type: none"> <li>• सुगंधित पौधों के तेल आसवन इकाई की स्थापना की। सुगंधित पौधों के उत्पादकों को कस्टम किराये के आधार पर तेल आसवन की सुविधा प्रदान की।</li> </ul>   |

## उपकार टीम अवलोकन:

1. अधिकांश शोध कार्यो की प्रगति बहुत धीमी है। प्रधान अन्वेषकों को वित्त पोषण एजेंसियों को उपयोगिता प्रमाणपत्र प्रस्तुत करने में समस्या आ रही है, जिससे वित्त पोषण एजेंसियों से धनराशि अवमुक्त होने में विलम्ब हो रहा है।
2. वर्तमान में चल रही शोध परियोजनाओं में उद्देश्य और परिणाम से विचलन दिखाई दे रहा है। ऐसा प्रतीत होता है कि प्रधान अन्वेषक अपने शोध पर ध्यान केंद्रित नहीं कर रहे हैं।
3. वित्त पोषण एजेंसियों को प्रस्तुत किए गए शोध प्रस्तावों की गुणवत्ता अच्छी नहीं है, ऐसा प्रतीत होता है कि विश्वविद्यालय की परियोजना मूल्यांकन समिति शोध प्रस्ताव प्रस्तुत करते समय सावधानी नहीं बरत रही है।
4. समिति द्वारा वित्त कार्यालय से संपर्क करने का प्रयास किया गया, लेकिन विभाग से कोई उत्तर प्राप्त नहीं हुआ।
5. परियोजना के अंतर्गत यंग प्रोफेशनल [YP-I/YP-II] की नियुक्ति केवल छह महीने के लिए होती है, न कि परियोजना की अवधि तक।
6. यद्यपि शोध वैज्ञानिक अपने उत्पादों/टेक्नोलॉजी के लिए पेटेंट दाखिल कर रहे हैं, लेकिन वे उन उत्पादों/टेक्नोलॉजी के लाइसेंस और व्यावसायीकरण से अनभिज्ञ हैं। यह विश्वविद्यालय के लिए एक बड़ा वित्तीय हानि है। निजी कंपनियाँ इन किस्मों/टेक्नोलॉजी को अपनाकर योजनाओं से धन कमा रही हैं।
7. विश्वविद्यालय के पास दीर्घकालिक, और अल्पकालिक के बारे में कोई स्पष्ट दृष्टिकोण नहीं है; उन्हें इस पहलू पर कार्य करने की आवश्यकता है।
8. शोध की प्रकाशन की गुणवत्ता बहुत निम्न स्तर की है। अधिकांश प्रकाशन निम्न गुणवत्ता वाली पत्रिकाएँ हैं।
9. पिछले पाँच वर्षों में अनाज/दलहन/तिलहन में कुछ ही किस्में जारी या अधिसूचित की गई हैं, लेकिन बागवानी और सब्जियों की एक भी किस्म जारी या अधिसूचित नहीं की गई।
10. पुरानी और महत्वपूर्ण किस्मों के संरक्षण में कोई संतोषजनक कार्य नहीं किया गया। आगे की प्रक्रिया के लिए उनके पास न तो न्यूक्लियस बीज हैं और न ही प्रजनक बीज।

## उपकार टीम के सुझाव/अनुशंसाएँ:

1. विश्वविद्यालय में अंतःविषय सहयोग को बढ़ावा देने से समग्र शोध परिणामों में उल्लेखनीय वृद्धि होती है।
2. नए और युवा प्राध्यापकों को अच्छे प्रस्ताव लिखने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। उन्हें वैज्ञानिक लेखन या प्रस्ताव लेखन पर कुछ प्रशिक्षण की आवश्यकता है।

3. पेटेंट दाखिल और उसके लाइसेंसिंग/व्यावसायीकरण के लिए उचित प्रशिक्षण होना चाहिए; इससे उन्हें उत्पाद/टेक्नोलॉजी को किसानों तक पहुंचाने में मदद मिलेगी। प्रौद्योगिकी हस्तांतरण के लिए एक सुव्यवस्थित तंत्र स्थापित करना अत्यंत आवश्यक है।
4. छात्रों और प्राध्यापकों में उद्यमशीलता की मानसिकता विकसित करने के लिए पहल की जानी चाहिए।
5. परियोजना के अंतर्गत यंग प्रोफेशनल (YP-I/YP-II) की नियुक्ति परियोजना के अंत तक या उनके प्रदर्शन के आधार पर होनी चाहिए, न कि केवल छह महीने के लिए। केवल छह महीने के लिए परियोजना कर्मचारियों की नियुक्ति अनिवार्य रूप से परियोजना संचालन में बाधा आती है। विश्वविद्यालय में यंग प्रोफेशनल/जे.आर.एफ/एस.आर.एफ की बार-बार नियुक्ति में भी काफी समय लगता है, जिससे परियोजना प्रमुख के लिए परियोजना को सुचारू रूप से चलाना मुश्किल हो जाता है।
5. विश्वविद्यालय को एक व्यापक मूल्यांकन ढाँचे को अपनाने पर विचार करना चाहिए जो शोध योगदान की गुणवत्ता, गहराई और सामाजिक प्रभाव को पहचानते हों, और एक ऐसी शोध संस्कृति को बढ़ावा दें जो केवल प्रकाशन संख्या तक ही सीमित न हो।
6. शोध पारिस्थितिकी प्रणाली में सतत योगदान को मान्यता देने और प्रोत्साहित करने के लिए शोध-उन्मुख भत्ते शुरू किए गए हैं। ये प्रोत्साहन सामूहिक रूप से एक सहायक वातावरण का निर्माण करते हैं, जो शिक्षकों को अपने शोध प्रयासों को प्राथमिकता देने और उनमें उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए प्रेरित करते हैं।
7. शैक्षणिक उत्कृष्टता, अंतर-सांस्कृतिक दृष्टिकोणों को बढ़ावा देने और वैश्विक शोध परिदृश्य को समृद्ध बनाने के लिए शोध में अंतर्राष्ट्रीय सहयोग को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।
8. शिक्षकों और छात्रों के लिए संरचनात्मक प्रतिपुष्टि पद्धति और अनुशंधान केंद्रों और विभागों की समय-समय पर समीक्षा करना।
9. शोध परिदृश्य को सुदृढ़ करने के लिए, एक व्यापक दीर्घकालिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करना आवश्यक है जो तात्कालिक चुनौतियों से परे हो, जिसमें रणनीतिक योजना और विकास शामिल हो।
10. प्रत्येक विश्वविद्यालय को आवश्यकता-आधारित शोध के लिए प्रमुख क्षेत्रों की पहचान करने के लिए प्रोत्साहित करना, विशिष्ट विशेषज्ञता को बढ़ावा देने और सामाजिक चुनौतियों का समाधान करने के लिए एक रणनीतिक अनिवार्यता है।
11. शोध के लक्ष्यों को प्रभावी ढंग से संप्रेषित करने के लिए प्रेस विज्ञप्ति, सोशल मीडिया अभियान और इंटरैक्टिव प्लेटफॉर्म जैसे विविध माध्यमों का उपयोग करना।

12. समिति ने चमत्कारी किस्मों सरजू 52, नरेंद्र 2 और मस्टर्ड 8501 को पुनः अधिसूचित करने की संस्तुति की, क्योंकि ये अभी भी प्रमुख या उच्च उपज देने वाली किस्में हैं।
13. विश्वविद्यालय को AICRP द्वारा अधिसूचित दो मक्का लाइनों पर काम करना चाहिए और पिछले 10 वर्षों में इन प्रजनन लाइनों की स्थिति की जांच करनी चाहिए।
14. उत्तर प्रदेश के कृषि उत्पादन आयुक्त के अनुसार, उपकार को निर्देश दिया गया कि उपकार प्रत्येक छह महीने में राज्य कृषि विश्वविद्यालयों में अनुसंधान, शिक्षा और विस्तार की समीक्षा और निगरानी करेगा।



आचार्य देव कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या के पदाधिकारियों के साथ  
उपकार टीम के सदस्यों की चर्चा



प्रायोगिक क्षेत्र भ्रमण के दौरान उपकार टीम के सदस्य



मछली पालन एवं मखाने की खेती की जानकारी लेते उपकार टीम के सदस्य

# कृषि शिक्षा और गुणवत्ता पूर्ण शोध समय की आवश्यकता



कृषि विश्वविद्यालय में बैठक में मौजूद अतिथि व अन्वय। -कृषि विश्वविद्यालय

## संवाद न्यूज एजेंसी

कुमारगंज। आचार्य नरेंद्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय में दो दिवसीय समीक्षा बैठक हुई। बैठक में कृषि विवि में विगत तीन वर्षों के कृषि शिक्षा, शोध एवं प्रसार के कार्यों की समीक्षा की गई।

बैठक की अध्यक्षता कर रहे उत्तर प्रदेश कृषि अनुसंधान परिषद (उपकार) के महानिदेशक डॉ. संजय सिंह ने कहा कि विश्वस्तरीय कृषि शिक्षा, गुणवत्ता पूर्ण शोध समय की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि उपकार कृषि शिक्षा, शोध एवं प्रसार को बढ़ावा देने के लिए कटिबद्ध है। उन्होंने

## आचार्य नरेंद्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय में हुई दो दिवसीय समीक्षा बैठक

छात्रों में उद्यमिता को बढ़ावा दिए जाने की वकालत करते हुए विश्व स्तरीय शोध करने पर बल दिया।

समीक्षा बैठक में सुझाव देते हुए प्रो. परमेंद्र सिंह ने कहा कि आज मौसम परिवर्तन की चुनौती से हो रहे नुकसान को कम करने की दिशा में हम सबको मिलकर काम करना होगा। इस अवसर पर डॉ. सुशील कुमार, डॉ. राम बटुक सिंह, डॉ. धीरेंद्र कुमार सिंह मौजूद रहे।

## विश्वस्तरीय कृषि शिक्षा, गुणवत्ता युक्त शोध समय की मांग: डा. संजय

जासं • कुमारगंज (अयोध्या): आचार्य नरेंद्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय में समीक्षा बैठक हुई। गत तीन वर्षों की कृषि शिक्षा, शोध एवं प्रसार के कार्यों की समीक्षा की गई। अध्यक्षता उत्तर प्रदेश कृषि अनुसंधान परिषद के महानिदेशक डा. संजय सिंह ने की। विज्ञानी मखाना परिक्षेत्र का निरीक्षण करने भी गए।

महानिदेशक डा. सिंह ने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू होने के बाद कृषि विवि में भी इसे लागू करने की प्राथमिकता होनी चाहिए। बताया कि उत्तर प्रदेश कृषि अनुसंधान परिषद (उपकार) प्रदेश में कृषि शिक्षा, शोध एवं प्रसार को बढ़ावा देने के लिए प्रतिबद्ध है। इसके लिए सरकार गुणवत्तापूर्ण शोध करा रही है। कई परियोजनाएं संचालित हो रही हैं। इससे किसानों के जीवन स्तर को उठाया जा सकेगा। उन्होंने छात्रों में उद्यमिता को बढ़ावा दिए जाने पर बल दिया। सुझाव देते हुए उपकार के कृषि शिक्षा एवं तकनीकी हस्तान्तरण के उप निदेशक प्रो. परमेंद्र सिंह ने कहा कि आज मौसम परिवर्तन की चुनौती से हो रहे कृषि एवं किसानों के नुकसान को कम करने की दिशा में कार्य करना होगा। इस अवसर पर उपकार के शोध के उप निदेशक डा. राजर्षि कुमार गौड़ ने कहा कि मछली पालन, मशरूम उत्पादन, मधुमक्खी पालन के साथ ही विभिन्न फसलों एवं सब्जियों के गुणवत्ता पूर्ण बीज के उत्पादन की

उत्तर प्रदेश कृषि अनुसंधान परिषद  
द्वारा  
आचार्य नरेंद्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय,  
अयोध्या  
का भ्रमण करने और समीक्षा के उपरांत की  
कार्यवृत्त  
प्रसार निदेशालय प्रगति रिपोर्ट



उ० प्र० कृषि अनुसंधान परिषद  
निकट राजकीय उद्यान, करियप्पा मार्ग, आलमबाग, लखनऊ (उ० प्र०)- 226005

## आचार्य नरेंद्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, अयोध्या के दौरे की कार्यवृत्त

22-23 अगस्त 2025 को, उत्तर प्रदेश कृषि अनुसंधान परिषद (उपकार), लखनऊ के निम्नलिखित सदस्यों ने पिछले तीन वर्षों [2022-2025] के अनुसंधान, शिक्षा और परिसर तथा संबद्ध कृषि विज्ञान केंद्र (के.वी.के.) में प्रसार की समीक्षा के लिए आचार्य नरेंद्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, अयोध्या का दौरा किया।

1. डॉ. संजय सिंह, महानिदेशक
2. डॉ. परमेन्द्र सिंह, उप-महानिदेशक (कृ० शि० एवं प्रौ० ह०)
3. डॉ. राजर्षि कुमार गौर, उप-महानिदेशक (अनु० परि० प्र० एवं सम०)

| कर्मचारी विवरण |            |          |
|----------------|------------|----------|
| स्वीकृत पद     | भरे हुए पद | रिक्त पद |
| 400            | 288        | 112      |

| कृषि विज्ञान केंद्र (के.वी.के.) गतिविधियाँ (2022-2025) |  |
|--|--|
|  | <ul style="list-style-type: none"> <li>• आचार्य नरेंद्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, कुमारगंज 25 के.वि.के.के माध्यम से 3 ज़ोन के लिए कार्य कर रहा है।</li> </ul>   |
| <b>1.</b>  | <p><b>प्रमुख प्रसार उपलब्धियाँ</b></p> <p><b>A) मुख्य प्रसार उपलब्धियाँ:</b></p> <ul style="list-style-type: none"> <li>• कुल 7,479 प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए जिनमें 1,81,624 लोगों ने भाग लिया।</li> <li>• 917 ऑन-फार्म ट्रायल (OFT) पूरे किए गए, जिनमें 3,895 प्रतिभागियों ने भाग लिया।</li> <li>• 8,461.28 हेक्टेयर क्षेत्र को फ्रंट लाइन प्रदर्शनों (FLD) के तहत कवर किया गया, जिसमें 30,290 किसानों ने हिस्सा लिया।</li> <li>• 4,883 प्रसार गतिविधियाँ आयोजित की गईं, जिनसे 18,65,692 प्रतिभागी लाभान्वित हुए।</li> <li>• 25,233 मृदा और पादप परीक्षण किए गए, जिससे 35,398 किसानों को लाभ हुआ।</li> <li>• 15,879.37 क्विंटल बीज का उत्पादन किया गया, जिसमें 2,29,526 किसान शामिल थे।</li> <li>• 33,58,597 पौध सामग्री 1,45,029 लाभार्थियों को वितरित की गई।</li> <li>• 1,30,917.15 किलोग्राम उप-उत्पाद 63,623 प्रतिभागियों को शामिल करते हुए</li> </ul> |

उत्पन्न किए गए।

- 5,274 पशुधन-संबंधी गतिविधियाँ 1,915 प्रतिभागियों के साथ पूरी की गईं।
- मत्स्य पालन में, 1,398 प्रतिभागियों की भागीदारी के साथ कुल 53,329 इकाइयाँ सम्मिलित की गईं।
- दालों पर CFLD के माध्यम से राष्ट्रीय दलहन उत्पादन 2013-2016 के दौरान तीन साल के औसत 17.70 मीट्रिक टनसे बढ़कर 2022-23 में 27.80 मीट्रिक टन हो गया। औसत 40% की उपज वृद्धि हुई और मृदा में नाइट्रोजन वृद्धि के साथ 12% अतिरिक्त प्रतिस्थापन हुआ।
- छोटे और सीमांत किसानों के लिए IFS मॉडल की स्केलिंग अधिकार क्षेत्र के 22 जिलों में स्थापित की गई—जिससे परिवारों की शुद्ध आय में 39% की वृद्धि हुई और आहार विविधता स्कोर में 8.57% का सुधार हुआ।
- ग्रामीण युवाओं और फार्म महिलाओं के स्व-रोजगार के लिए ज्ञान और कौशल का उन्नयन; 3,725 क्षमता विकास कार्यक्रमों ने कृषि-आधारित उद्यम इकाइयों को समर्थन दिया, जिससे 94,613 ग्रामीण युवाओं को लाभ हुआ और 25 KVKs के माध्यम से 106 FPO को बढ़ावा मिला।
- सभी श्रेणियों में, 10,505 कार्यक्रम आयोजित किए गए जिनमें कुल 2,63,284 लाभार्थी थे।
- कुल 7,479 मौसमी प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए, जिनसे 1,81,624 प्रतिभागियों को लाभ हुआ।
- ग्रामीण युवाओं के लिए 1,264 कार्यक्रम आयोजित किए गए जिनमें 29,482 लाभार्थी थे।
- प्रसार कार्यकर्ताओं के प्रशिक्षण में 729 कार्यक्रम शामिल थे जिनमें 16,919 लाभार्थी थे।
- प्रायोजित प्रशिक्षणों में 399 कार्यक्रम आयोजित किए गए, जो 20,864 लाभार्थियों तक पहुँचे।
- व्यावसायिक प्रशिक्षणों के लिए 634 कार्यक्रम आयोजित किए गए, जिससे 14,395 प्रतिभागी लाभान्वित हुए।
- कुल 4,710 कार्यक्रम आयोजित किए गए, जिसमें तीन वर्षों में कुल 18,48,478 (या 1.84 मिलियन से अधिक) प्रतिभागियों की उपस्थिति रही।
- किसान गोष्ठी में सबसे अधिक कार्यक्रम (600 कार्यक्रम) आयोजित किए गए, इसके बाद फील्ड डे (459) और महत्वपूर्ण दिवसों का समारोह (336) रहा।
- सर्वाधिक उपस्थिति वाली गतिविधियाँ (कुल प्रतिभागियों द्वारा): सबसे बड़ी संख्या में प्रतिभागियों को आकर्षित करने वाली गतिविधियाँ किसान मेला (5,71,660), प्रदर्शनी (4,18,790), और सलाहकारी सेवाएँ (3,76,712) थीं।
- WhatsApp सबसे व्यापक रूप से उपयोग किया जाने वाला मंच है, जिसमें 194 समूह और 41,037 फॉलोअर्स हैं।
- Facebook और Twitter भी लोकप्रिय हैं, जिनके क्रमशः 18,750 और 9,675

फॉलोअर्सहैं।

- YouTube और Instagram के क्रमशः 8,025 और 5,675 फॉलोअर्सहैं।
- सोशल मीडिया प्लेटफार्मों में Telegram के सबसे कम 5,425 फॉलोअर्सहैं।
- तीन साल की अवधि में कुल 16,790 नमूनों का विश्लेषण किया गया, प्रत्येक वर्ष एक सुसंगत संख्या बनाए रखी गई।
- कुल 2,018 एग्री क्लिनिकसंचालित किए गए। 2023-24 में संख्या चरम पर थी (878) और 2024-25 में काफी कम हो गई (462)।
- पशु क्लिनिककी संख्या में लगातार और महत्वपूर्ण वृद्धि देखी गई, जो 2022-23 में 243 से बढ़कर 2024-25 में 528 हो गई, जिसके परिणामस्वरूप तीन साल का कुल योग 1,099 रहा।
- सलाहकारी सेवाओंके प्रावधान में भी एक मजबूत बढ़ती प्रवृत्ति दिखाई देती है, जो 2022-23 में 3,127 से बढ़कर 2024-25 में 5,140 हो गई, जिसके परिणामस्वरूप कुल 12,494 सेवाएँप्रदान की गईं।
- पौध सामग्री कुल 33,58,597 इकाईहै, जिसका कुल मूल्य ₹71,08,355.00 था।
- जैव-उत्पाद (किग्रा) कुल 1,30,917.2 किग्रा रहा, हालांकि पिछले दो वर्षों की तुलना में 2024-25 में आपूर्ति मात्रा में एक महत्वपूर्ण गिरावट देखी गई।
- बीज (क्विकल) उत्पादन ने अपेक्षाकृत स्थिर उत्पादन बनाए रखा, जिसके परिणामस्वरूप तीन वर्षों में कुल 15,879.37 क्विकलहुआ जिसका कुल मूल्य ₹4,87,12,886.25 है।
- मत्स्य पालन उत्पादन (संख्या) कुल 53,329 इकाईरहा।
- पशुधन उत्पादन (संख्या) कुल 5,274 इकाईरहा।
- KVKs पहल के माध्यम से बीज उत्पादन, 2022-23 से 2024-25 तक फैला हुआ, 2,29,526 किसानों को संचयी रूप से लाभान्वित किया और कुल 15,879.37 क्विकलबीज उत्पादन प्राप्त किया जिसका मौद्रिक मूल्य ₹4,87,12,886.25 है, जिसमें वर्ष 2023-24 में उत्पादन और मूल्य दोनों के लिए सबसे अधिक आंकड़े दर्ज किए गए।
- कुल 375 वार्षिक रिपोर्टका हिसाब है, जिसमें से प्रत्येक तीन वर्षों में 125 की योजना बनाई गई या पूरी की गई।
- सफलता की कहानियों की कुल संख्या 175 है, जिसमें सबसे अधिक संख्या, 75, 2023-24 में थी, और 2022-23 और 2024-25 दोनों में 50 थीं।
- प्रसार साहित्य की कुल मात्रा सबसे बड़ी 3,625 है, जिसमें 2022-23 में 1,125 और 2023-24 और 2024-25 दोनों में 1,250 पीसशामिल हैं।
- कुल 18 न्यूज़ लेटरदस्तावेजित हैं, जिसमें प्रत्येक तीन वर्षों में 6 की एक सुसंगत संख्या की योजना बनाई गई या प्रकाशित की गई।

## **B) नवाचार दृष्टिकोण और विशेष परियोजनाएँ**

विभिन्न दृष्टिकोण और कार्यप्रणाली हैं जो KVK के सभी चैनलों के माध्यम से संप्रेषित किए

गए, जिनमें से कुछ हैं:

- धान में खरपतवार प्रबंधन के लिए नए शाकनाशी का उपयोग।
- अनाज फसलों में नैनो उर्वरक का उपयोग।
- किसान के खेत में डायरेक्ट सीडेड राइस (DSR) का लोकप्रियकरण।
- सरसों में सल्फर आधारित जल घुलनशील उर्वरक (थायोरिया) का उपयोग।
- मोटे अनाज (Millets) की उत्पादन तकनीकें।
- ड्रोन और सैटेलाइट इमेजिंग।
- जीपीएस और आई-संचालित सिस्टम।
- सतत कृषि के लिए जैव-उर्वरक को बढ़ावा देना।
- संवर्धित वर्मीकम्पोस्ट और मशरूम उत्पादन।
- रंगीन आम की किस्मों को बढ़ावा देना।
- धान में फाल्स स्मट का प्रबंधन।
- DSR में नए शाकनाशी द्वारा खरपतवार प्रबंधन।
- श्री अन्न का उपयोग करके विनिर्ग फूडको बढ़ावा देना।
- लवण प्रभावित मृदा में धान की नव जारी किस्म का प्रदर्शन।
- जिले में खरीफ प्याज और मशरूम उत्पादन तकनीक का प्रदर्शन।
- मार्केटिंग-लेड एक्सटेंशन।
- NICRA आउटपुट इंगित करता है कि जलवायु-लचीली कृषि प्रौद्योगिकियों (CRM, DSR, आदि) को अपनाते हुए 30% से 58% तक बढ़ गई, जिससे औसत किसान आय में पर्याप्त वृद्धि हुई, जिसका आंकड़ा ₹52,000 प्रति हेक्टेयर तक पहुंच गया।
- सभी लाइन विभागों जैसे UPCAR, IRRI, IIVR, NSC & IFFCO, DDAg., DHO, पशुपालन, गन्ना विकास, IFFCO, मत्स्य पालन के साथ समझौता ज्ञापन (MOU)।

### C) प्रभाव और परिणाम मूल्यांकन

- टमाटर, लौकी, धान और गेहूं का पोषक तत्व प्रबंधन।
- गेहूं की जीरो सीड ड्रिल तकनीक।
- मछली तालाब की जल गुणवत्ता पर जल एवं मृदा प्रोबायोटिक्स।
- वर्मीकम्पोस्ट उत्पादन तकनीक।
- जैव-उर्वरकों और जैव-कीटनाशकों का उपयोग।
- बागवानी में फर्टिगेशन के साथ ड्रिप सिंचाई।

### D) अवसंरचना, प्रशासन, और अनुपालन (Infrastructure, Administration, and Compliance)

|           |   |
|-----------|---|
|           | <ul style="list-style-type: none"> <li>• मासिक रिपोर्ट: प्रत्येक वर्ष 300 → तीन वर्षों में कुल 900</li> <li>• त्रैमासिक रिपोर्ट: प्रत्येक वर्ष 100 → तीन वर्षों में कुल 300</li> <li>• वार्षिक रिपोर्ट: 2022-23 में 1125, 2023-24 में 1250, और 2024-25 में 1250 → तीन वर्षों में कुल 3625</li> </ul>  |
| <b>2.</b> | <b>परिक्रामी निधि (Revolving Fund) की स्थिति (पिछले 3 वर्ष)</b>   |
|           | <ul style="list-style-type: none"> <li>• 2022-23 में कुल परिक्रामी निधि ₹2,88,36,053 (दो करोड़, अठ्ठासी लाख, छत्तीस हजार, तिरेपन रुपये) थी। यह आधारभूत निधि स्थिति के रूप में कार्य करता है।</li> <li>• 2023-24 में कुल परिक्रामी निधि में महत्वपूर्ण वृद्धि हुई, जो ₹3,37,64,202 (तीन करोड़, सैंतीस लाख, चौंसठ हजार, दो सौ दो रुपये) तक पहुँच गई।</li> <li>• 2024-25 में कुल परिक्रामी निधि में पर्याप्त वृद्धि जारी रही, जो ₹4,62,05,495 (चार करोड़, बासठ लाख, पाँच हजार, चार सौ पंचानबे रुपये) तक पहुँच गई।</li> </ul> |
| <b>3.</b> | <b>परिक्रामी निधि (Revolving Fund) के उपयोग की प्रक्रिया</b>  |
|           | <ul style="list-style-type: none"> <li>• आम तौर पर, कृषि गतिविधियों के लिए उपयोग किया जाता है, कभी-कभी माननीय कुलपति की अनुमति से कृषि उपकरण, भवन के रखरखावके लिए उपयोग किया जाता है।</li> </ul>  |
| <b>4.</b> | <b>राष्ट्रीय मान्यता (पुरस्कार, सर्वश्रेष्ठ KVK, आदि)</b>   |
|           | <ul style="list-style-type: none"> <li>• पुरस्कारों की कुल संख्या में हर साल वृद्धि हुई, जो 2022-23 में 18 से शुरू होकर 2023-24 में 21 तक बढ़ी, और 2024-25 में 25 पर चरम पर पहुँच गई।</li> <li>• कुल मिलाकर, तीन साल की अवधि में सभी श्रेणियों में 64 पुरस्कार प्राप्त हुए।</li> </ul>  |
| <b>5.</b> | <b>NAAS <math>\geq 6</math> से ऊपर के शोध प्रकाशन (पिछले 3 वर्ष) / तकनीकी बुलेटिन योगदान</b>  |
|           | <ul style="list-style-type: none"> <li>• NAAS <math>\geq 6</math> से ऊपर कुल 11 पेपर प्रकाशित किए गए हैं (पिछले 3 वर्ष)।</li> </ul>   |
| <b>6.</b> | <b>KVK उद्यम इकाइयों से राजस्व सृजन</b>   |
|           | <ul style="list-style-type: none"> <li>• 2023-24 में कुल ₹1,73,81,958 का राजस्व उत्पन्न हुआ।</li> <li>• 2024-25 में कुल ₹1,79,05,781 का राजस्व उत्पन्न हुआ।</li> </ul>  |
| <b>7.</b> | <b>पिछले तीन वर्षों में परियोजनाओं की संख्या</b>  |
|           | <ul style="list-style-type: none"> <li>• 5,277.94 लाख रुपये की कुल लागत के साथ 24 परियोजनाएँ। परियोजनाओं में कृषि प्रौद्योगिकी पार्क, KVKs को मजबूत बनाना, KVK मुख्य योजना, फसल अवशेष प्रबंधन (CRM), अनुसूचित जाति उप-योजना (SCSP), जनजातीय उप-योजना (TSP), जलवायु लचीला कृषि पर राष्ट्रीय नवाचार (NICRA), कृषि में युवाओं को आकर्षित करना और बनाए रखना (ARYA), क्लस्टर फ्रंटलाइन प्रदर्शन तिलहन</li> </ul>   |

|            |  |
|------------|--|
|            | (CFLD- Oilseed), क्लस्टर फ्रंटलाइन प्रदर्शन दलहन (CFLD- Pulses), किण्वित जैविक खाद (FOM), स्वच्छता कार्य योजना (SAP), पीएम-किसान, विकसित कृषि संकल्प अभियान - खरीफ (VKSY), CIMMYT- मक्का, UPCAR-DSR, मूंगफली प्रशिक्षण, प्राकृतिक खेती केंद्र (CoNF) में प्राकृतिक खेती पर प्रशिक्षण, उत्कृष्टता केंद्र, ATMA परियोजना के तहत बिहार राज्य का प्रशिक्षण कार्यक्रम, IRRI, IARI- काला नमक, और किसान बायोटेक हब शामिल हैं। |
| <b>8.</b>  | <b>KVKs का कुल बजट ICAR शेयर और UP शेयर वर्षवार</b>  |
|            | <ul style="list-style-type: none"> <li>• कुल बजट (ICAR + UP शेयर) 2022-23 में ₹4,390.02 लाख, 2023-24 में ₹4,418.99 लाख, और 2024-25 में ₹4,160.13 लाख हो गया।</li> <li>• ICAR शेयर 2022-23 में ₹4,303.74 लाख, 2023-24 में ₹4,388.18 लाख, और 2024-25 में ₹3,865.80 लाख है।</li> <li>• UP शेयर 2022-23 में ₹86.28 लाख, 2023-24 में ₹30.81 लाख, और 2024-25 में ₹68.77 लाख है।</li> </ul>                                   |
| <b>9.</b>  | <b>प्राकृतिक खेती प्रशिक्षण / अनुसंधान की स्थिति</b>   |
|            | <ul style="list-style-type: none"> <li>• प्राकृतिक खेती में, विभिन्न प्रदर्शन गतिविधियों के तहत 26 कृषि विज्ञान केंद्र (KVKs) में कुल 99 किसान शामिल हैं।</li> </ul>   |
| <b>10.</b> | <b>महिलाओं को मजबूत करने के लिए महिला कार्यक्रम की संख्या (वर्षवार पिछले 3 वर्ष)</b>   |
|            | <ul style="list-style-type: none"> <li>• 3 वर्षों में कुल 371 कार्यक्रम पूरे किए गए, जिनमें 2022-23 में 110, 2023-24 में 119 और 2024-25 में 142 पूरे किए गए।</li> </ul>  |
| <b>11.</b> | <b>स्टार्ट-अप/उद्यमिता (वर्षवार पिछले 3 वर्ष)</b>  |
|            | <ul style="list-style-type: none"> <li>• स्टार्ट-अप और उद्यमिता गतिविधियों की कुल संख्या में तीन वर्षों में लगातार वृद्धि हुई है, जो 2022-23 में 84 से शुरू होकर 2023-24 में 97 तक बढ़ी, और 2024-25 में 99 तक पहुँची।</li> </ul>   |
| <b>12.</b> | <b>विकसित भारत @2047" के लिए दृष्टिकोण</b>   |
|            | <ul style="list-style-type: none"> <li>• सामुदायिक सशक्तिकरण और पहुंच।</li> <li>• स्थिरता और कृषि-नवाचार।</li> <li>• युवा भागीदारी और उद्यमिता।</li> <li>• स्वदेशी ज्ञान और पारंपरिक ज्ञान।</li> <li>• प्रौद्योगिकी अपनाना और डिजिटल समावेश।</li> <li>• क्षमता निर्माण और संस्थागत भागीदारी।</li> </ul>  |

### उपकार अवलोकन और सुझाव:

- ✚ विश्वविद्यालय प्रसार में प्रयास कर रहा है और कई क्षेत्रों में प्रगति दिखा चुका है, जैसे कि तकनीकी विकास और बुनियादी ढांचा सुधार; हालांकि, संस्था को निम्नलिखित कारणों से चुनौतियों का सामना जारी है:
- ✚ अपर्याप्त मानव संसाधन और विशेषज्ञ वैज्ञानिक।
- ✚ विश्वविद्यालय और KVKs में प्रसार में अधिकतम प्रभावशीलता सुनिश्चित करने के लिए 112 रिक्त स्टाफ पदों को भरने की आवश्यकता।
- ✚ सेंटर ऑफ़ एक्सीलेंस का कार्य कुछ KVK पर बहुत अच्छा है लेकिन अधिकांश KVK पर स्थिति बहुत दयनीय, इसमें सुधार की आवश्यकता।
- ✚ प्रौद्योगिकियों का अपर्याप्त व्यावसायीकरण।
- ✚ कमजोर परियोजना प्रबंधन प्रणाली।
- ✚ जमीनी स्तर पर प्रसार के प्रभावों की सीमित दृश्यता।
- ✚ AUCs की प्रस्तुतियाँ बहुत देरी से होने पर विभिन्न कार्य बाधित अतः समयानुसार प्रस्तुतियां हों।
- ✚ पत्रिकाओं की गुणवत्ता में कमी और अनुसंधान पत्रों की मात्रा बहुत कम है।
- ✚ KVK महाराजगंज और KVK सोनभद्र पर विशेष ध्यान देने की जरूरत है इनके चार दीवारी एवं बिजली के साथ अन्य संसाधनों की कमी।
- ✚ KVKs पर संयंत्रों की कमी जिससे जरूरी काम प्रभावित होते हैं, RevolvingFund (RF) से KVKs पर विभिन्न यंत्र तथा संयंत्र खरीदे जा सकते हैं अतः RF का यथोचित उपयोग करें।
- ✚ वित्त विभाग द्वारा समय से धनराशि जारी नहीं होने से परियोजनाएं प्रभावित।
- ✚ वैज्ञानिकों द्वारा बताया गया रूटीन खर्च हेतु उनको धनराशि निर्गत करने का अधिकार प्राप्त नहीं है जिससे समस्त कार्य प्रभावित होते हैं अतः यह अधिकार ICAR के अनुरूप दिया जाये।
- ✚ समीक्षा बैठक कि पूर्व सूचना होने के बावजूद निदेशक प्रसार बैठक में बहुत कम समय के लिए उपस्थित रहे।
- ✚ ऐसा संज्ञान में आया कि विश्वविद्यालय में फ़ाइलों का संचालन धीमा है, इसलिये समस्त कार्य ( शोध, प्रसार एवं शिक्षण) विलंबित होते हैं अतः इसमें सुधार की आवश्यकता है।
- ✚ विश्वविद्यालय में प्रसार एवं प्रशिक्षण का किसानों के ऊपर विशेष प्रभाव नहीं दिखाई दे रहा।

- ✚ वि०वि० में यंग प्रोफेशनल को 6 माह कि जगह एक पूर्ण वर्ष के लिए रखा जाए।
- ✚ कृषि विज्ञान केन्द्रों के वैज्ञानिकों को NAAS रेटेड मानक पत्रिकाओं में प्रकाशित करने के लिए प्रोत्साहित करें।
- ✚ किसानों पर प्रसार गतिविधियों के प्रभाव को मापने और दस्तावेजीकृत करने के लिए एक प्रणाली विकसित करें।
- ✚ विश्वविद्यालय द्वारा विकसित तकनीकों को अक्सर निःशुल्क प्रदान किया जाता है। यद्यपि यह किसानों के प्रति प्रतिबद्धता को दर्शाता है, यह राजस्व सृजन को सीमित करता है और संस्थान की आर्थिक स्थिरता को कमजोर बनाता है। तकनीकी लाइसेंसिंग और व्यावसायीकरण के लिए एक तंत्र आवश्यक है।
- ✚ तकनीक के व्यावसायीकरण और लाइसेंसिंग को बढ़ावा दें, यह सुनिश्चित करते हुए कि उत्पाद विश्वविद्यालय के स्वामित्व में हों।
- ✚ राज्य और राष्ट्रीय कृषि प्राथमिकताओं के अनुरूप उच्च-प्रभाव वाले अनुसंधान को प्रोत्साहित करें।
- ✚ जैव-उत्पादों के उत्पादन और आपूर्ति को स्थिर करें और उसे बढ़ाएं ताकि किसानों की मांग पूरी हो सके।
- ✚ श्री अन्न और अन्य नवीन दृष्टिकोणों (ड्रोन/एआई-समर्थित सिस्टम) को बढ़ावा दें ताकि सस्टेनेबिलिटी और एग्री-इनोवेशन और प्रौद्योगिकी अपनाना और डिजिटल समावेशन को पूरा किया जा सके।
- ✚ सभी कृषि विज्ञान केंद्र के कार्य में समानता एवं गुणवत्ता बनी रहने के लिए हर सीजन से पहले सभी कृषि विज्ञान केंद्र के कार्यक्रम कि समीक्षा करना जरूरी है।



आचार्य नरेंद्र देव कृ० एवं प्रौ० विश्वविद्यालय, अयोध्याके पदाधिकारियों के साथ चर्चा करते हुए उपकार टीम के सदस्य

# कृषि शिक्षा और गुणवत्ता पूर्ण शोध समय की आवश्यकता



कृषि विश्वविद्यालय में बैठक में मौजूद अतिथि व अन्य। -कृषि विश्वविद्यालय

## संवाद न्यूज एजेंसी

कुमारगंज। आचार्य नरेंद्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय में दो दिवसीय समीक्षा बैठक हुई। बैठक में कृषि विवि में विगत तीन वर्षों के कृषि शिक्षा, शोध एवं प्रसार के कार्यों की समीक्षा की गई।

बैठक की अध्यक्षता कर रहे उत्तर प्रदेश कृषि अनुसंधान परिषद (उपकार ) के महानिदेशक डॉ. संजय सिंह ने कहा कि विश्वस्तरीय कृषि शिक्षा, गुणवत्ता पूर्ण शोध समय की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि उपकार कृषि शिक्षा, शोध एवं प्रसार को बढ़ावा देने के लिए कटिबद्ध है। उन्होंने

## आचार्य नरेंद्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय में हुई दो दिवसीय समीक्षा बैठक

छात्रों में उद्यमिता को बढ़ावा दिए जाने की वकालत करते हुए विश्व स्तरीय शोध करने पर बल दिया।

समीक्षा बैठक में सुझाव देते हुए प्रो. परमेंद्र सिंह ने कहा कि आज मौसम परिवर्तन की चुनौती से हो रहे नुकसान को कम करने की दिशा में हम सबको मिलकर काम करना होगा। इस अवसर पर डॉ. सुशील कुमार, डॉ. राम बटुक सिंह, डॉ. धीरेंद्र कुमार सिंह मौजूद रहे।

## समाचार पत्रों में समीक्षा बैठक

## विश्वस्तरीय कृषि शिक्षा, गुणवत्ता युक्त शोध समय की मांग: डा. संजय

जासं • कुमारगंज (अयोध्या): आचार्य नरेंद्रदेव कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय में समीक्षा बैठक हुई। गत तीन वर्षों की कृषि शिक्षा, शोध एवं प्रसार के कार्यों की समीक्षा की गई। अध्यक्षता उत्तर प्रदेश कृषि अनुसंधान परिषद के महानिदेशक डा. संजय सिंह ने की। विज्ञानी मखाना परिक्षेत्र का निरीक्षण करने भी गए।

महानिदेशक डा. सिंह ने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू होने के बाद कृषि विवि में भी इसे लागू करने की प्राथमिकता होनी चाहिए। बताया कि उत्तर प्रदेश कृषि अनुसंधान परिषद (उपकार ) प्रदेश में कृषि शिक्षा, शोध एवं प्रसार को बढ़ावा देने के लिए प्रतिबद्ध है। इसके लिए सरकार गुणवत्तापूर्ण शोध करा रही है। कई परियोजनाएं संचालित हो रही हैं। इससे किसानों के जीवन स्तर को उठाया जा सकेगा। उन्होंने छात्रों में उद्यमिता को बढ़ावा दिए जाने पर बल दिया। सुझाव देते हुए उपकार के कृषि शिक्षा एवं तकनीकी हस्तान्तरण के उप निदेशक प्रो. परमेंद्र सिंह ने कहा कि आज मौसम परिवर्तन की चुनौती से हो रहे कृषि एवं किसानों के नुकसान को कम करने की दिशा में कार्य करना होगा। इस अवसर पर उपकार के शोध के उप निदेशक डा. राजर्षि कुमार गौड़ ने कहा कि मछली पालन, मशरूम उत्पादन, मधुमक्खी पालन के साथ ही विभिन्न फसलों एवं सब्जियों के गुणवत्ता पूर्ण बीज के उत्पादन की आवश्यकता है। इस अवसर पर डा. सुशील कुमार , निदेशक शोध डा. राम बटुक सिंह, निदेशक प्रसार डा. धीरेंद्र कुमार सिंह आदि मौजूद रहे।